'कर्क' लग्न

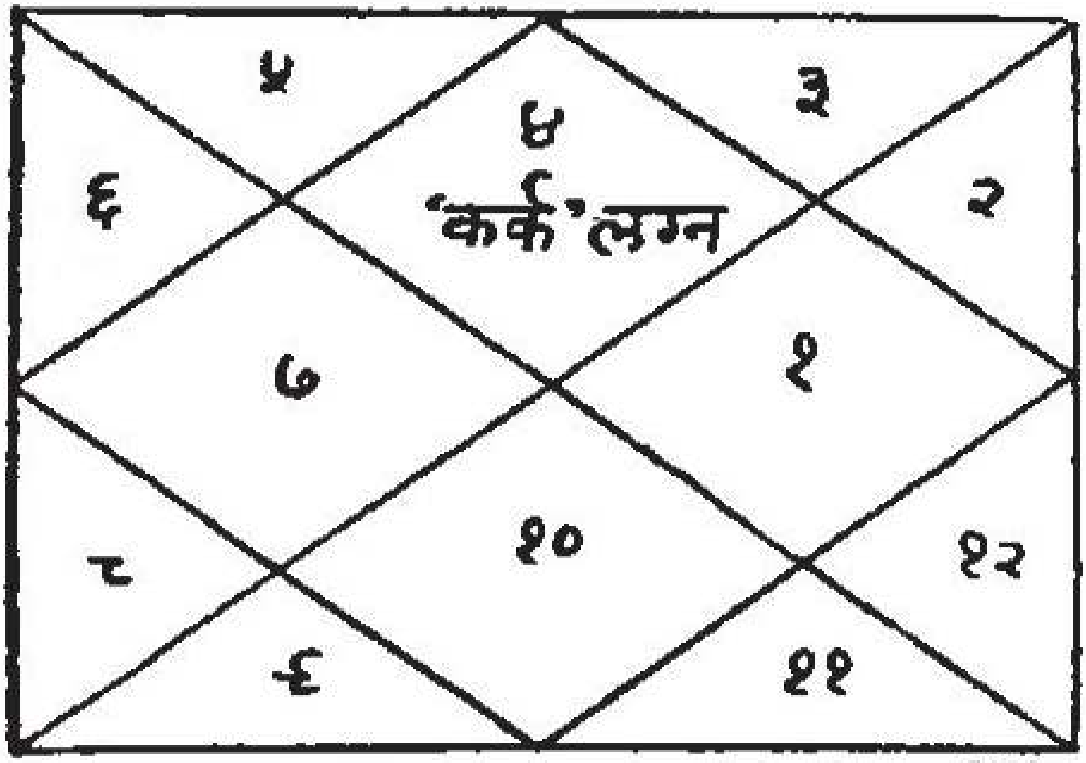

४७२

['कर्क' लग्न की कुण्डलियों के विभिन्न भावों में स्थित विभिन्न ग्रहों के फलादेश का पृथक्-पृथक् वर्णन]

'कर्क' लग्न का फलादेश

'कर्क' लग्न में उत्पन्न जातक का शरीर गौर-वर्ण तथा शक्तिशाली होता है। वह पित्त प्रकृति वाला, बुद्धिमान्, धर्मात्मा, उदार, विनम्र, धनी, जलक्रीड़ा-प्रेमी, पवित्र, क्षमाशील तथा मिष्टान्न-भोजी होता है; परन्तु इसके साथ ही वह व्यसनी, अत्यन्त ढीठ, कुटिल-स्वभाव, मित्र-द्रोही तथा कभी-कभी विपरीत-बुद्धि का परिचय देने वाला भी होता है।

इस लग्न वाला व्यक्ति अपने शत्रुओं से पीड़ित रहता है। उसके कन्या-सन्तानें अधिक होती हैं तथा उसे अपना जन्म-स्थान छोड़कर परदेश में निवास करना पड़ता है।

इस लग्न वाले जातक का भाग्योदय १६-१७ वर्ष की आयु में ही हो जाता है।

'कर्क' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित विभिन्न ग्रहों का स्थायी फलादेश आगे दी गई उदाहरण-कुण्डली संख्या ४४३ से ५५० के बीच देखना चाहिए।

गोचर-कुण्डली के ग्रहों का फलादेश किन उदाहरण-कुण्डलियों में देखें, इसे आगे लिखे अनुसार समझ लेना चाहिए।

'कर्क' लग्न में 'सूर्य' का फलादेश

१—'कर्क' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'सूर्य' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ४४३ से ४५४ के बीच देखना चाहिए।

२—'कर्क' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'सूर्य' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस महीने में सूर्य—

(क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या ४४३
(ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या ४४४
(ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या ४४५
(घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या ४४६
(ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या ४४७
(च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या ४४८
(छ) 'तुला' राशि पर हो की संख्या ४४९
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या ४५०
(झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या ४५१
(ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या ४५२
(ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या ४५३
(ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या ४५४

'कर्क' लग्न में 'चन्द्रमा' का फलादेश

१—'कर्क' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'चन्द्रमा' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ४५५ से ४६६ के बीच देखना चाहिए।

२—'कर्क' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित

'चन्द्रमा' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस दिन 'चन्द्रमा'—

(क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या ४५५
(ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या ४५६
(ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या ४५७
(घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या ४५८
(ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या ४५९
(च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या ४६०
(छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या ४६१
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या ४६२
(झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या ४६३
(ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या ४६४
(ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या ४६५
(ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या ४६६

'कर्क' लग्न में 'मंगल' का फलादेश

१—'कर्क' लग्न वालों की अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'मङ्गल' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ४६७ से ४७८ के बीच देखना चाहिए।

२—'कर्क' लग्न वालों की गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'मङ्गल' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस महीने में 'मङ्गल'—

(क) 'मेष' राशि पर स्थित हो तो संख्या ४६७
(ख) 'वृष' राशि पर स्थित हो तो संख्या ४६८
(ग) 'मिथुन' राशि पर स्थित हो तो संख्या ४६९
(घ) 'कर्क' राशि पर स्थित हो तो संख्या ४७०
(ङ) 'सिंह' राशि पर स्थित हो तो संख्या ४७१
(च) 'कन्या' राशि पर स्थित हो तो संख्या ४७२
(छ) 'तुला' राशि पर स्थित हो तो संख्या ४७३
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर स्थित हो तो संख्या ४७४
(झ) 'धनु' राशि पर स्थित हो तो संख्या ४७५
(ञ) 'मकर' राशि पर स्थित हो तो संख्या ४७६
(ट) 'कुम्भ' राशि पर स्थित हो तो संख्या ४७७
(ठ) 'मीन' राशि पर स्थित हो तो संख्या ४७८

'कर्क' लग्न में 'बुध' का फलादेश

१—'कर्क' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'बुध' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ४७९ से ४९० के बीच देखना चाहिए।

२—'कर्क' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'बुध' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस महीने में 'बुध'—

(क) 'मेष' राशि पर स्थित हो तो संख्या ४७९
(ख) 'वृष' राशि पर स्थित हो तो संख्या ४८०
(ग) 'मिथुन' राशि पर स्थित हो तो संख्या ४८१
(घ) 'कर्क' राशि पर स्थित हो तो संख्या ४८२
(ङ) 'सिंह' राशि पर स्थित हो तो संख्या ४८३
(च) 'कन्या' राशि पर स्थित हो तो संख्या ४८४
(छ) 'तुला' राशि पर स्थित हो तो संख्या ४८५
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर स्थित हो तो संख्या ४८६
(झ) 'धनु' राशि पर स्थित हो तो संख्या ४८७
(ञ) 'मकर' राशि पर स्थित हो तो संख्या ४८८
(ट) 'कुम्भ' राशि पर स्थित तो हो संख्या ४८९
(ठ) 'मीन' राशि पर स्थित हो तो संख्या ४९०

'कर्क' लग्न में 'गुरु' का फलादेश

१—'कर्क' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'गुरु' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ४९१ से ५०२ के बीच देखना चाहिए।

२—'कर्क' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'गुरु' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस वर्ष में 'गुरु'—

(क) 'मेष' राशि पर स्थित हो तो संख्या ४९१
(ख) 'वृष' राशि पर स्थित हो तो संख्या ४९२
(ग) 'मिथुन' राशि पर स्थित हो यो संख्या ४९३
(घ) 'कर्क' राशि पर स्थित हो तो संख्या ४९४
(ङ) 'सिंह' राशि पर स्थित हो तो संख्या ४९५
(च) 'कन्या' राशि पर स्थित हो तो संख्या ४९६

(छ) 'तुला' राशि पर स्थित हो तो संख्या ४९७
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर स्थित हो तो संख्या ४९८
(झ) 'धनु' राशि पर स्थित हो तो संख्या ४९९
(ञ) 'मकर' राशि पर स्थित हो तो संख्या ५००
(ट) 'कुम्भ' राशि पर स्थित हो तो संख्या ५०१
(ठ) 'मीन' राशि पर स्थित हो तो संख्या ५०२

'कर्क' लग्न में 'शुक्र' का फलादेश

१—'कर्क' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शुक्र' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ५०३ से ५१४ के बीच देखना चाहिए।

२—'कर्क' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शुक्र' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस महीने में 'शुक्र'—

(क) 'मेष' राशि पर स्थित हो तो संख्या ५०३
(ख) 'वृष' राशि पर स्थित हो तो संख्या ५०४
(ग) 'मिथुन' राशि पर स्थित हो तो संख्या ५०५
(घ) 'कर्क' राशि पर स्थित हो तो संख्या ५०६
(ङ) 'सिंह' राशि पर स्थित हो तो संख्या ५०७
(च) 'कन्या' राशि पर स्थित हो तो संख्या ५०८
(छ) 'तुला' राशि पर स्थित हो तो संख्या ५०९
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर स्थित हो तो संख्या ५१०
(झ) 'धनु' राशि पर स्थित हो तो संख्या ५११
(ञ) 'मकर' राशि पर स्थित हो तो संख्या ५१२
(ट) 'कुम्भ' राशि पर स्थित हो तो संख्या ५१३
(ठ) 'मीन' राशि पर स्थित हो तो संख्या ५१४

'कर्क' लग्न में 'शनि' का फलादेश

१—'कर्क' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शनि' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ५१५ से ५२६ के बीच देखना चाहिए।

२—'कर्क' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शनि'

का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस वर्ष में 'शनि'—

(क) 'मेष' राशि पर स्थित हो तो संख्या ५१५
(ख) 'वृष' राशि पर स्थित हो तो संख्या ५१६
(ग) 'मिथुन' राशि पर स्थित हो तो संख्या ५१७
(घ) 'कर्क' राशि पर स्थित हो तो संख्या ५१८
(ङ) 'सिंह' राशि पर स्थित हो तो संख्या ५१९
(च) 'कन्या' राशि पर स्थित हो तो संख्या ५२०
(छ) 'तुला' राशि पर स्थित हो तो संख्या ५२१
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर स्थित हो तो संख्या ५२२
(झ) 'धनु' राशि पर स्थित हो तो संख्या ५२३
(ञ) 'मकर' राशि पर स्थित हो तो संख्या ५२४
(ट) 'कुम्भ' राशि पर स्थित हो तो संख्या ५२५
(ठ) 'मीन' राशि पर स्थित हो तो संख्या ५२६

'कर्क' लग्न में 'राहु' का फलादेश

१—'कर्क' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'राहु' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ५२७ से ५३८ के बीच देखना चाहिए।

२—'कर्क' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'राहु' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस वर्ष में 'राहु'—

(क) 'मेष' राशि पर स्थित हो तो संख्या ५२७
(ख) 'वृष' राशि पर स्थित हो तो संख्या ५२८
(ग) 'मिथुन' राशि पर स्थित हो तो संख्या ५२९
(घ) 'कर्क' राशि पर स्थित हो तो संख्या ५३०
(ङ) 'सिंह' राशि पर स्थित हो तो संख्या ५३१
(च) 'कन्या' राशि पर स्थित हो तो संख्या ५३२
(छ) 'तुला' राशि पर स्थित हो तो संख्या ५३३
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर स्थित हो तो संख्या ५३४
(झ) 'धनु' राशि पर स्थित हो तो संख्या ५३५
(ञ) 'मकर' राशि पर स्थित हो तो संख्या ५३६
(ट) 'कुम्भ' राशि पर स्थित हो तो संख्या ५३७
(ठ) 'मीन' राशि पर स्थित हो तो संख्या ५३८

'कर्क' लग्न में 'केतु' का फलादेश

१—'कर्क' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'केतु' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ५३९ से ५५० के बीच देखना चाहिए।

२—'कर्क' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'केतु' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस वर्ष में 'केतु'—

(क) 'मेष' राशि पर स्थित हो तो संख्या ५३९

(ख) 'वृष' राशि पर स्थित हो तो संख्या ५४०

(ग) 'मिथुन' राशि पर स्थित हो तो संख्या ५४१

(घ) 'कर्क' राशि पर स्थित हो तो संख्या ५४२

(ङ) 'सिंह' राशि पर स्थित हो तो संख्या ५४३

(च) 'कन्या' राशि पर स्थित हो तो संख्या ५४४

(छ) 'तुला' राशि पर स्थित हो तो संख्या ५४५

(ज) 'वृश्चिक' राशि पर स्थित हो तो संख्या ५४६

(झ) 'धनु' राशि पर स्थित हो तो संख्या ५४७

(ञ) 'मकर' राशि पर स्थित हो तो संख्या ५४८

(ट) 'कुम्भ' राशि पर स्थित हो तो संख्या ५४९

(ठ) 'मीन' राशि पर स्थित हो तो संख्या ५५०

●

'कर्क' लग्न में 'सूर्य'

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

कर्क लग्न : प्रथमभाव : सूर्य

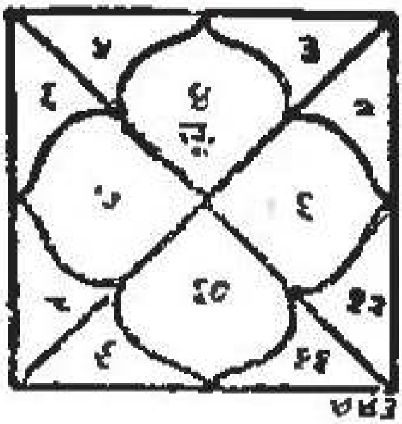

प्रथमभाव में जिस चन्द्रमा की राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक के शारीरिक सौन्दर्य, तेज तथा प्रभाव में वृद्धि होती है। उसे धन तथा कुटुम्ब की शक्ति भी प्राप्त होती है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से सप्तमभाव को देखने के कारण स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयों के साथ साथ होता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

कर्क लग्न : द्वितीयभाव : सूर्य

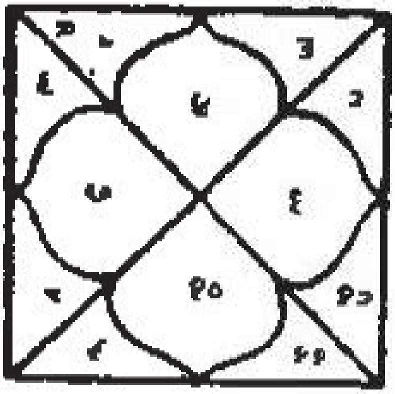

७४४

दूसरे भाव में स्वराशि-स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक के धन, कुटुम्ब, यश तथा प्रतिष्ठा में वृद्धि होती है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से अष्टमभाव को देखने के कारण जातक की आयु में कमी आती है तथा पुरातत्त्व एवं दैनिक चर्या में भी सामान्य कठिनाइयों का शिकार होना पड़ता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

कर्क लग्न : तृतीयभाव : सूर्य

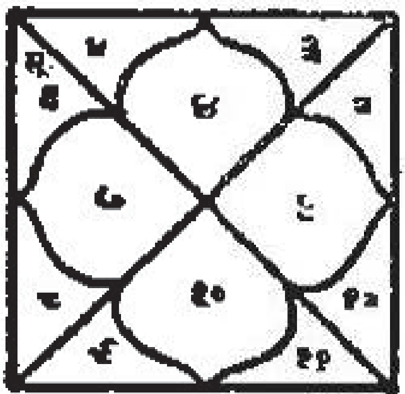

७४५

तीसरे भाव में मित्र बुध की राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक के पराक्रम की वृद्धि होती है तथा भाई-बहिनों का सुख कुछ त्रुटियों के साथ प्राप्त होता है। पराक्रम के द्वारा धन-वृद्धि भी होती है। सातवीं मित्रदृष्टि से नवमभाव को देखने से जातक पराक्रम द्वारा भाग्य की वृद्धि तथा धर्म का पालन करता है। उसका प्रभाव एवं सम्मान भी बढ़ता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

कर्क लग्न : चतुर्थभाव : सूर्य

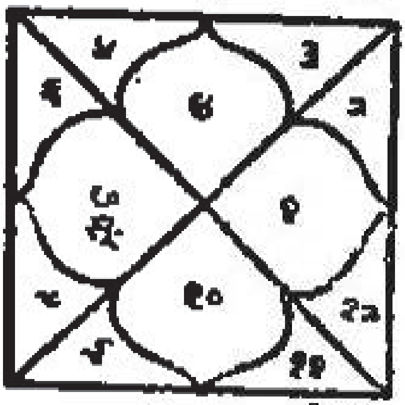

७४६

चौथे भाव में शत्रु शुक्र की राशिस्थ नीच के सूर्य के प्रभाव से जातक के माता, भूमि तथा भवन के सुख में कमी रहती है। धन तथा कुटुम्ब का सुख भी कम मिलता है।

सातवीं उच्च दृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता, यश तथा धन की प्राप्ति होती है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

कर्क लग्न : पंचमभाव : सूर्य

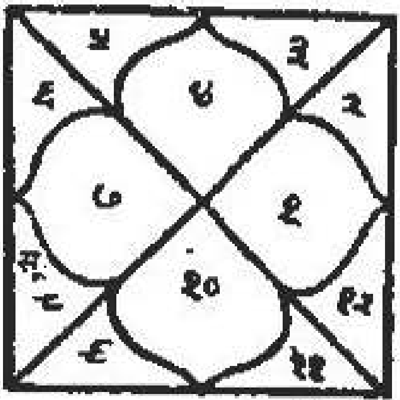

४४७

पाँचवें भाव में मित्र मंगल की राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक के सन्तान-सुख में बाधा आती है, परन्तु एक सन्तान अत्यन्त प्रभावशालिनी होती है। विद्या तथा बुद्धि के क्षेत्र में पूर्ण सफलता प्राप्त होती है तथा धन की वृद्धि भी होती है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से एकादशभाव को देखने से आमदनी अच्छी रहती है। ऐसा जातक स्पष्ट वक्ता तथा उग्र स्वभाव का होता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

कर्क लग्न : षष्ठभाव : सूर्य

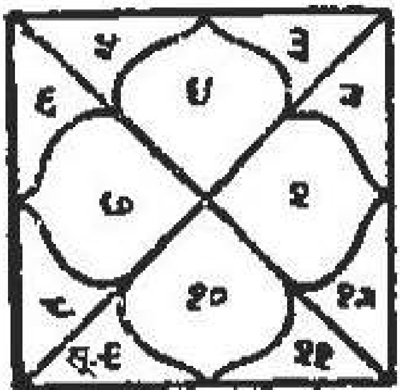

४४८

छठें भाव में मित्र गुरु की राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक शत्रु-पक्ष पर अत्यन्त प्रभाव रखता है, परन्तु धन तथा कुटुम्ब के सुख में कमी रहती है।

सातवीं मित्रदृष्टि से द्वादशभाव को देखने से बाहरी सम्बन्धों से लाभ होता है तथा खर्च अधिक रहता है। ऐसा व्यक्ति अपनी प्रतिष्ठा के आगे धन की चिंता नहीं करता तथा झगड़े एवं परिश्रम के कामों से प्रभाव की वृद्धि करता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

कर्क लग्न : सप्तमभाव : सूर्य

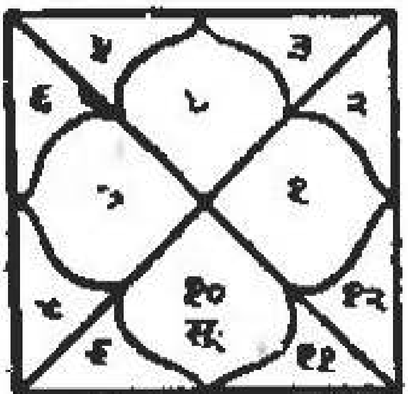

४४९

सातवें भाव में शत्रु शनि की राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को स्त्री-पक्ष से कष्ट होता है। स्त्री से वैमनस्य रहता है तथा व्यवसाय में भी परेशानियाँ आती रहती हैं। मूत्रेन्द्रिय में विकार तथा पारिवारिक कठिनाइयाँ भी रहती हैं।

सातवीं मित्रदृष्टि से प्रथमभाव को देखने से जातक को प्रतिष्ठा मिलती है तथा शारीरिक प्रभाव भी बना रहता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

कर्क लग्न : अष्टमभाव : सूर्य

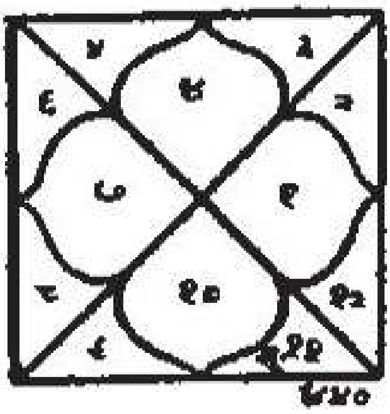

सातवें भाव में शत्रु शनि की राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक की आयु पर कभी-कभी संकट आते रहते हैं तथा पुरातत्त्व के लाभ में भी कमी आती है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि के द्वितीयभाव के देखने से धन तथा कुटुम्ब के सुख में कुछ कमी रहती है तथा पेट में भी कोई रोग हो सकता है। ऐसे व्यक्ति का रहन-सहन धनवानों जैसा होता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

कर्क लग्न : नवमभाव : सूर्य

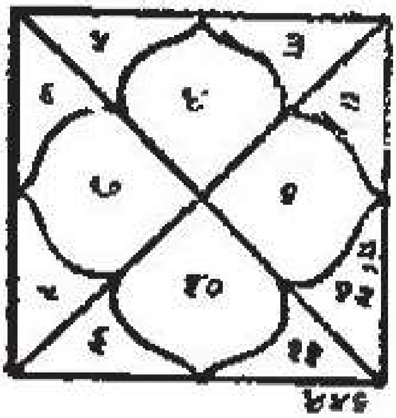

नवें भाव में मित्र सूर्य की राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक का भाग्य प्रबल होता है। वह धर्म का पालन भी करता है तथा मान-प्रतिष्ठा भी पाता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से तृतीयभाव को देखने के कारण पराक्रम में वृद्धि होती है तथा भाई-बहिनों का सुख मिलता है। ऐसा व्यक्ति पराक्रमी, सुखी, स्वार्थी तथा परमार्थी होता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

कर्क लग्न : दशमभाव : सूर्य

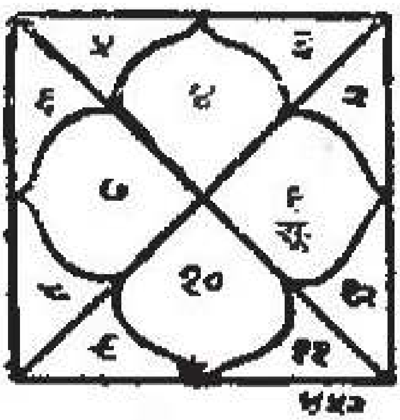

दसवें भाव में स्थित उच्च के सूर्य के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सहयोग, प्रतिष्ठा तथा लाभ की प्राप्ति होती है।

सातवीं नीचदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने के कारण माता, भूमि तथा भवन के साथ ही घरेलू सुख में भी कुछ कमियाँ बनी रहती हैं।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

कर्क लग्न : एकादशभाव : सूर्य

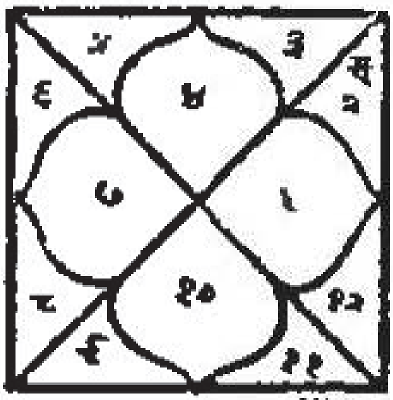

४४३

ग्यारहवें भाव में शत्रु शुक्र की राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को धन का विशेष लाभ होता है, परन्तु कौटुम्बिक सुख में कमी रहती है।

सातवीं मित्रदृष्टि से पंचमभाव को देखने के कारण विद्या-बुद्धि में प्रवीणता तथा सन्तान-पक्ष से लाभ होता है। ऐसा व्यक्ति ऐश्वर्यशाली जीवन बिताता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

कर्क लग्न : द्वादशभाव : सूर्य

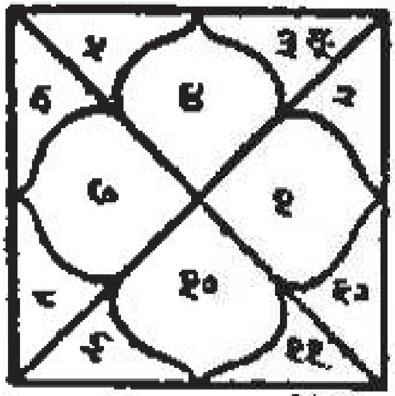

४४४

बारहवें भाव में मित्र बुध की राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से धन का श्रेष्ठ लाभ होता है, परन्तु खर्च की अधिकता रहती है। वह रईसी ढंग का जीवन बिताता है। धन तथा कौटुम्बिक सुख में कमी बनी रहती है।

सातवीं मित्रदृष्टि से षष्ठभाव को देखने से शत्रुओं पर विजय प्राप्त होती है।

'कर्क' लग्न में 'चन्द्रमा'

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

कर्क लग्न : प्रथमभाव : चन्द्र

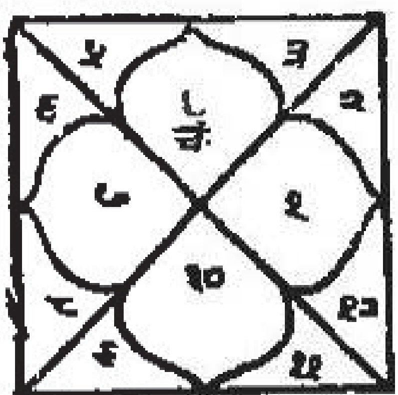

४४५

पहले भाव में स्वराशि में स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को सौन्दर्य, स्वास्थ्य, अधिक शक्ति, यश एवं प्रतिष्ठा प्राप्त होती है। ऐसा व्यक्ति उच्च कोटि का विचारक तथा गुणी होता है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री-पक्ष में असन्तोषपूर्ण सुख प्राप्त होता है, परन्तु व्यवसाय के क्षेत्र में बड़ी सफलता मिलती है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

कर्क लग्न : द्वितीयभाव : चन्द्र

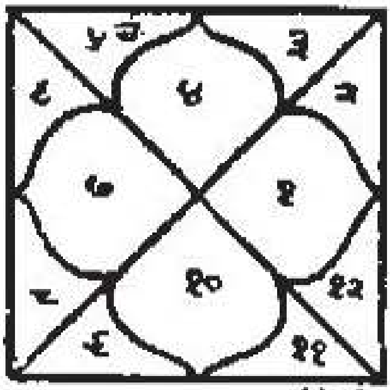

४४६

दूसरे भाव में मित्र सूर्य की राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को कुछ परेशानियों के साथ धन तथा कौटुम्बिक सुख पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध होता है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से अष्टम भाव को देखने से आयु के विषय में परेशानियाँ आती हैं तथा पुरातत्त्व का लाभ कम होता है। ऐसा व्यक्ति शान-शौकत का जीवन बिताने वाला, प्रतिष्ठित या भाग्यशाली होता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

कर्क लग्न : तृतीयभाव : चन्द्र

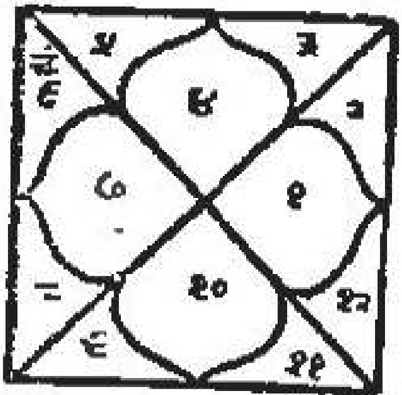

४४७

तीसरे भाव में मित्र बुध की राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक के पराक्रम एवं भाई-बहिन के सुख में अत्यन्त वृद्धि होती है।

सातवीं मित्र दृष्टि से नवमभाव को देखने से धर्म तथा भाग्य की भी पर्याप्त उन्नति होती है। ऐसा व्यक्ति धार्मिक, दानी, उदार, ईश्वर-भक्त, धनी, उत्साही, पराक्रमी तथा पुरुषार्थी होता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

कर्क लग्न : चतुर्थभाव : चन्द्र

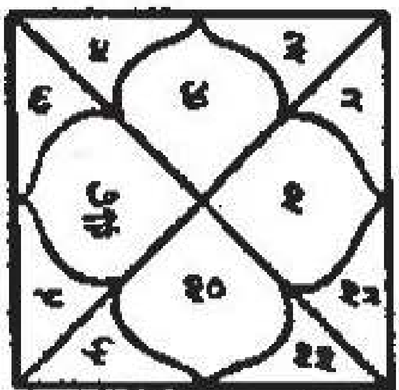

४४८

चौथे भाव में सामान्य-मित्र शुक्र की राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को माता, भूमि भवन आदि का पर्याप्त सुख उपलब्ध होता है। उसका शरीर सुन्दर तथा मन कोमल होता है।

सातवीं मित्र दृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता, राज्य तथा व्यवसाय के पक्ष में सफलता, सहयोग एवं यश की प्राप्ति होती है। ऐसा जातक हर प्रकार से सम्पन्न एवं सुखी रहता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

कर्क लग्न : पंचमभाव : चन्द्र

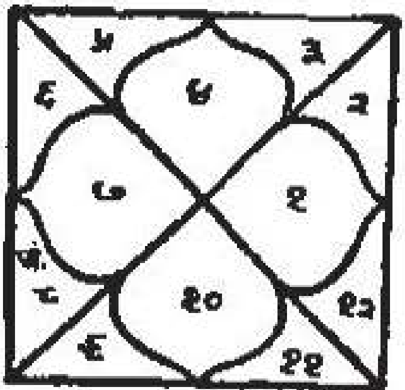

४५८

पाँचवें भाव में मित्र मंगल की राशि पर स्थित नीच के चन्द्रमा के प्रभाव से जातक की विद्या, बुद्धि तथा सन्तान के पक्ष में कठिनाई से सफलता मिलती है। मन तथा शरीर भी दुर्बल रहता है।

सातवीं उच्च दृष्टि से एकादशभाव को देखने से गुप्त मानसिक एवं शारीरिक शक्तियों के बल पर आमदनी अच्छी बनी रहती है, परन्तु कुछ अशान्ति का अनुभव भी होता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

कर्क लग्न : षष्ठभाव : चन्द्र

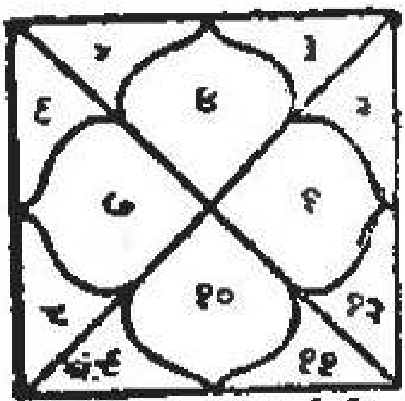

४६०

छठे भाव में मित्र सूर्य की राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को शत्रु-पक्ष में दुर्बलता रहती है और विनम्र बनकर काम निकालना पड़ता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से द्वादशभाव को देखने के कारण बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से यश, सम्मान तथा धन प्राप्त होता है एवं खर्च की अधिकता रहती है। ऐसा व्यक्ति गौरवशाली तथा आत्मबली होता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

कर्क लग्न : सप्तमभाव : चन्द्र

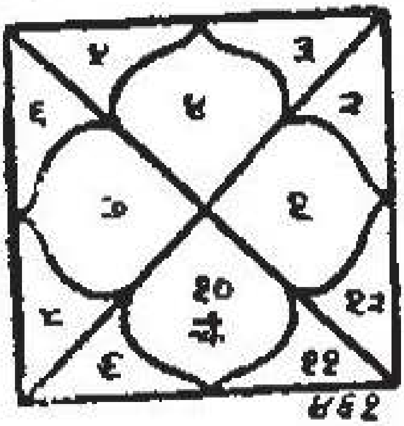

४६१

सातवें भाव में शत्रु शनि की राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को स्त्री-पक्ष में कुछ असन्तोष के बाद सफलता मिलती है तथा व्यवसाय पक्ष में भी कठिनाइयाँ आती हैं। ऐसा व्यक्ति भोगादि में अधिक रुचि रखता है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि के प्रथमभाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्य, प्रभाव, मनोबल तथा आत्मिक बल की प्राप्ति होती है। ऐसा व्यक्ति धनी, विलासी, सुखी तथा सुन्दर होता है।

कर्क लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

कर्कलग्न : अष्टमभाव : चन्द्र

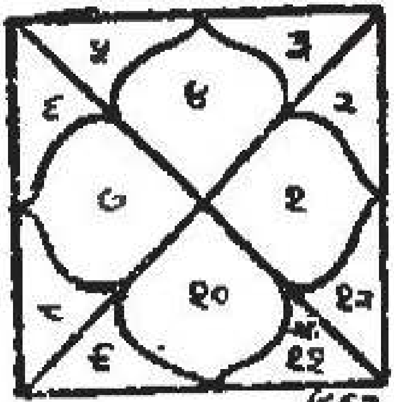

४६२

आठवें भाव में शत्रु शनि की राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक के शारीरिक सौन्दर्य में कमी आती है तथा पुरातत्त्व का लाभ असन्तोषजनक रहता है, परन्तु आयु की वृद्धि होती है।

सातवीं मित्रदृष्टि से द्वितीयभाव को देखने के कारण जातक अपने शारीरिक श्रम द्वारा धन-जन की वृद्धि करने में समर्थ होता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

कर्कलग्न : नवमभाव : चन्द्र

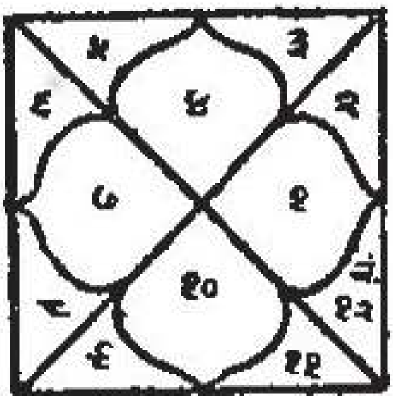

४६३

नवें भाव में मित्र गुरु की राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को मन तथा शरीर की अच्छी शक्ति प्राप्त होती है, जिसके कारण वह अपने भाग्य की खूब उन्नति करता है तथा धर्म का पालन भी करता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से तृतीयभाव को देखने से पराक्रम में वृद्धि होती है तथा भाई-बहिनों का सुख भी मिलता है। ऐसा व्यक्ति भाग्यशाली, धर्मात्मा, सतोगुणी, ईश्वर-भक्त, यशस्वी तथा सज्जन होता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

कर्कलग्न : दशमभाव : चन्द्र

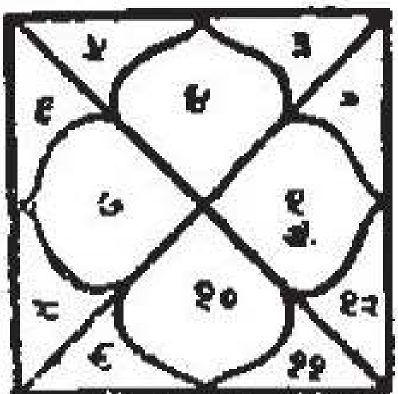

४६४

दसवें भाव में मित्र मंगल की राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य तथा व्यवसाय पक्ष से प्रभाव, यश तथा लाभ प्राप्त होता है और वह किसी उच्च पद को प्राप्त करता है। ऐसा व्यक्ति सुन्दर तथा शक्तिशाली होता है।

सातवीं सामान्य मित्र-दृष्टि से चतुर्थभाव को देखने के कारण जातक को भूमि, भवन आदि का सुख भी मिलता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

कर्कलग्न : एकादशभाव : चन्द्र

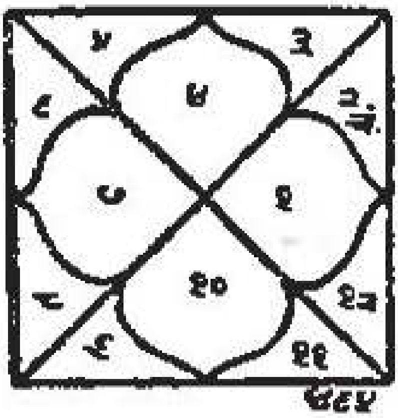

७८४

ग्यारहवें भाव में सामान्य मित्र शुक्र की राशि पर स्थित उच्च के चन्द्रमा के प्रभाव के जातक की शारीरिक एवं मानसिक शक्तियों एवं सौन्दर्य में वृद्धि होती है तथा आमदनी अच्छी रहती है।

सातवीं नीचदृष्टि से पंचमभाव को देखने से सन्तान तथा विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में कुछ कमी रहती है। ऐसा व्यक्ति अपने लाभ के लिए कटु शब्दों का प्रयोग करता पाया जाता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

कर्क लग्न : द्वादशभाव : चन्द्र

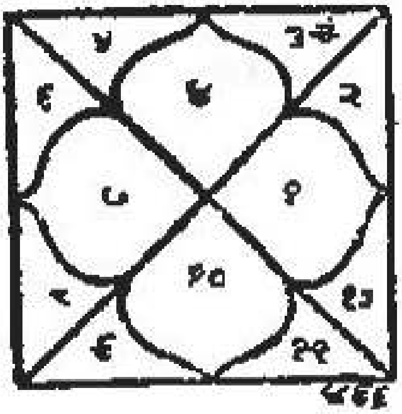

७८५

बारहवें भाव में मित्र बुध की राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को बाहरी सम्पर्क से लाभ होता है तथा खर्च अधिक रहता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से षष्ठभाव को देखने से शत्रु-पक्ष में अपने शान्त स्वभाव के द्वारा प्रभाव-स्थापित करता है, परन्तु मन में कुछ अशान्ति भी बनी रहती है।

ऐसे व्यक्ति का शरीर दुबला-पतला होता है।

'कर्क' लग्न में मंगल

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

कर्क लग्न : प्रथमभाव : मंगल

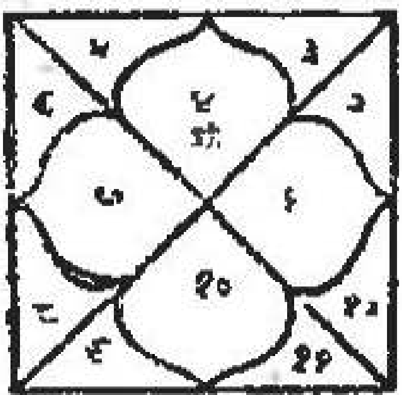

७८६

पहले भाव में मित्र चन्द्रमा की राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक के शारीरिक सौन्दर्य तथा स्वास्थ्य में कमी रहती है तथा पिता, राज्य, सन्तान एवं विद्या का पक्ष भी दुर्बल रहता है।

चौथी मित्र-दृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि, भवन का सुख मिलता है। सातवीं उच्च दृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री-पक्ष में असन्तोष-पूर्ण वृद्धि होती है तथा व्यवसाय में कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है।

आठवीं शत्रु-दृष्टि के अष्टम भाव को देखने से पुरातत्त्व तथा दैनिक जीवन में कमी रहती है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

कर्क लग्न : द्वितीयभाव : मंगल

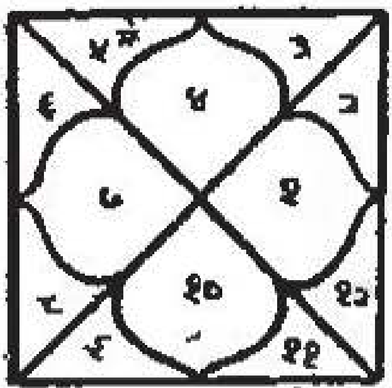

४६८

दूसरे भाव में मित्र सूर्य की राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को धन तथा कुटुम्ब का सुख मिलता है। राज्य तथा पिता से भी लाभ होता है। चौथी दृष्टि से स्वराशि में पचमभाव को देखने से विद्या तथा सन्तान की शक्ति मिलने पर भी कुछ कठिनाइयों का अनुभव होता रहता है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व के क्षेत्र में कमी आती है। आठवीं मित्र-दृष्टि से नवमभाव को देखने के कारण भाग्य, यश तथा धर्म की वृद्धि होती है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

कर्क लग्न : तृतीयभाव : मंगल

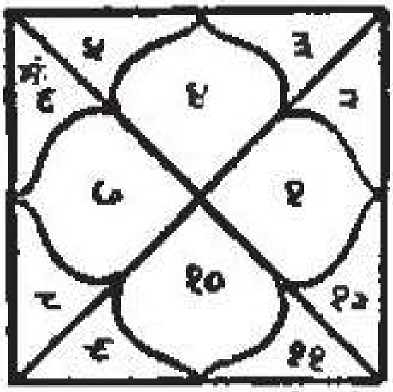

४६९

तीसरे भाव में मित्र बुध की राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक के पराक्रम तथा भाई-बहिन के सुख में वृद्धि होती है। विद्या तथा सन्तान का लाभ भी होता है। सातवीं मित्र-दृष्टि से नवमभाव को देखने से जातक बुद्धि-बल से भाग्यशाली होता है तथा यश एवं धर्म का लाभ करता है। आठवीं दृष्टि से स्वराशि में दशमभाव को देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सफलताएँ मिलती हैं। चौथी मित्र-दृष्टि से षष्ठभाव को देखने से शत्रु-पक्ष पर प्रभाव स्थापित होता है तथा विजय मिलती है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

कर्क लग्न : चतुर्थभाव : मंगल

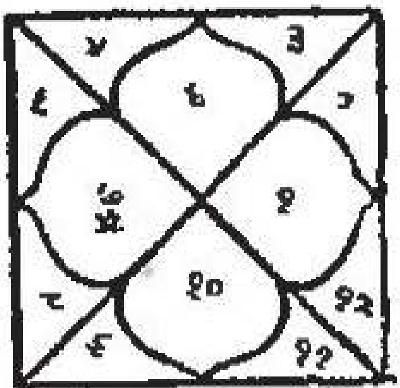

४७०

चौथे भाव में सामान्य मित्र शुक्र की राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को माता, भूमि एवं भवन का सुख मिलता है। विद्या-बुद्धि तथा सन्तान के क्षेत्र में भी सफलता मिलती है। उच्च दृष्टि से सप्तम-भाव को देखने से स्त्री तथा व्यवसाय का अच्छा लाभ होता है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि के दशमभाव को देखने के राज्य, पिता एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सुख, सहयोग तथा यश का लाभ होता है। सातवीं शत्रु-दृष्टि से एकादशभाव को देखने से धन की भी पर्याप्त आमदनी बनी रहती है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

कर्क लग्न : पंचमभाव : मंगल

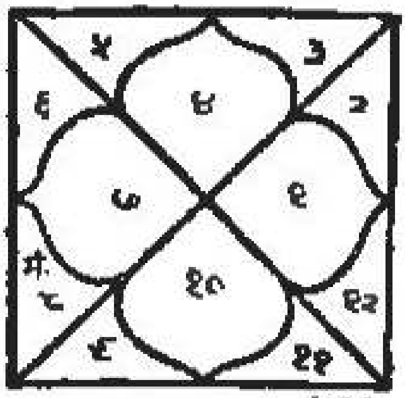

४७१

पाँचवें भाव में स्वराशिस्थ मंगल के प्रभाव से जातक को विद्या, बुद्धि एवं सन्तान का यथेष्ट लाभ होता है। चौथी शत्रुदृष्टि से अष्टमभाव को देखने से कुछ असन्तोष के साथ पुरातत्त्व एवं आयु का लाभ होता है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से एकादश भाव को देखने से लाभ-प्राप्ति के लिए दिमागी परिश्रम अधिक करना पड़ता है तथा आठवीं मित्र-दृष्टि से द्वादशभाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी सम्बन्धों से यश-धन की प्राप्ति होती रहती है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

कर्क लग्न : षष्ठभाव : मंगल

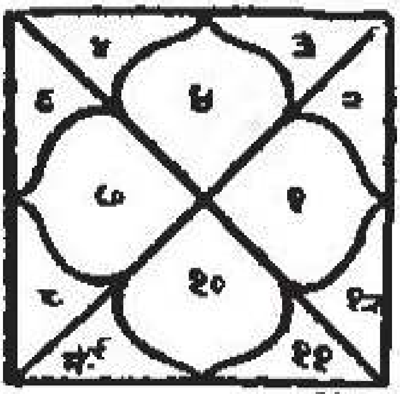

४७२

छठे भाव में मित्र बुध की राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को शत्रु पक्ष में विजय मिलती है तथा विद्या-बुद्धि एवं सन्तान का भी श्रेष्ठ लाभ होता है। चौथी मित्र-दृष्टि से नवमभाव को देखने से भाग्य तथा धर्म की वृद्धि होती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से द्वादशभाव को देखने से बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होता है तथा खर्च अधिक रहता है। आठवीं नीच-दृष्टि से प्रथम भाव को देखने से शारीरिक सुख, सौन्दर्य, स्वास्थ्य तथा शान्ति में कुछ कमी बनी रहती है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

कर्क लग्न : सप्तमभाव : मंगल

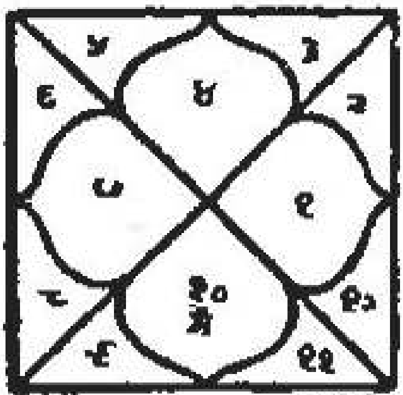

४७३

सातवें भाव में शत्रु शनि की राशि पर स्थित उच्च के मंगल के प्रभाव से जातक को अनेक सुन्दर स्त्रियों का लाभ होता है परन्तु उनसे कुछ मतभेद भी रहता है। व्यवसाय में विशेष सफलता मिलती है तथा विद्या, बुद्धि एवं सन्तान का पक्ष भी उत्तम रहता है।

चौथी दृष्टि से स्वराशि में दशमभाव को देखने से पिता तथा राज्य से सुख, लाभ एवं सम्मान मिलता है। सातवीं नीच दृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शारीरिक स्वास्थ्य एवं सौन्दर्य में कमी रहती है। आठवीं मित्र-दृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से धन-संचय खूब होता है तथा वाणी भी प्रभावशालिनी होती है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

कर्क लग्न : अष्टमभाव : मंगल

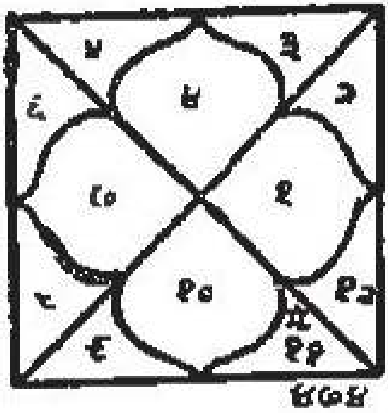

४७४

आठवें भाव में शत्रु शनि की राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को आयु तथा पुरातत्त्व का लाभ मिलता है, परन्तु विद्या, बुद्धि, सन्तान, पिता तथा राज्य पक्ष में कुछ हानि उठानी पड़ती है।

चौथी शत्रु-दृष्टि से एकादशभाव को देखने से परिश्रम द्वारा लाभ होता है। सातवीं मित्र-दृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से धन तथा कौटुम्बिक सुख में वृद्धि होती है। आठवीं मित्र-दृष्टि से तृतीयभाव को देखने से भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में वृद्धि होती है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

कर्क लग्न : नवमभाव : मंगल

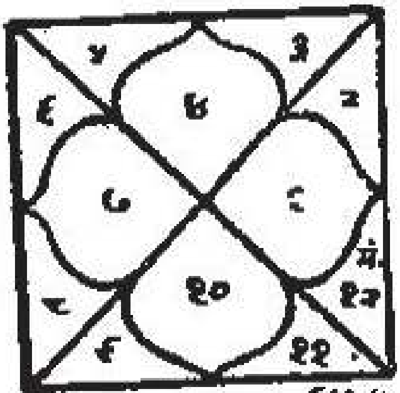

४७५

नवें भाव में मित्र गुरु की राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक की भाग्योन्नति होती है तथा विद्या, बुद्धि, सन्तान, पिता, राज्य एवं व्यवसाय पक्ष का सुख भी मिलता है।

चौथी मित्र-दृष्टि से द्वादशभाव को देखने से बाहरी सम्बन्धों से लाभ होता है तथा खर्च अधिक रहता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से तृतीयभाव को देखने से भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में वृद्धि होती है। आठवीं शत्रु-दृष्टि से चतुर्थभाव को देखने के माता, भूमि तथा भवन के सुख में कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

कर्क लग्न : दशमभाव : मंगल

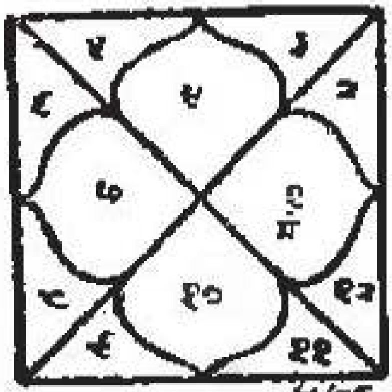

४७६

दसवें भाव में स्थित स्वक्षेत्री मंगल के प्रभाव के जातक को राज्य, पिता एवं व्यवसाय पक्ष से सुख, यश तथा धन का लाभ होता है। चौथी नीच-दृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्य में कुछ कमी रहती है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि तथा भवन का सुख कुछ असन्तोषजनक रहता है। आठवीं दृष्टि से स्वराशि के पंचमभाव को देखने के सन्तान, विद्या एवं बुद्धि का श्रेष्ठ लाभ होता है तथा कोई उच्च पद भी प्राप्त होता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

कर्क लग्न : एकादशभाव : मंगल

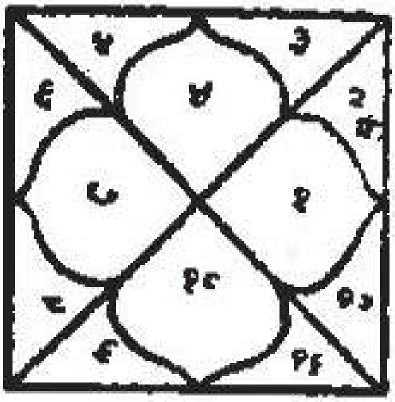

७८७

ग्यारहवें भाव में अपने सामान्य मित्र शुक्र की राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव के जातक को कठिन परिश्रम द्वारा पर्याप्त धन लाभ होता है तथा पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में भी सफलता मिलती है। चौथी मित्रदृष्टि के द्वितीय-भाव को देखने से भी धन तथा कुटुम्ब के सुख का लाभ होता है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि के पंचमभाव को देखने के कारण विद्या, बुद्धि तथा सन्तान का लाभ होता है। आठवीं मित्र-दृष्टि से षष्ठभाव को देखने से शत्रु-पक्ष पर विजय प्राप्त होती है। ऐसा व्यक्ति धनी, सुखी तथा शत्रुजयी होता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

बारहवें भाव में मित्र बुध की राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को बाहरी सम्बन्धों से लाभ होता है तथा खर्च अधिक रहता है। पिता, राज्य, संतान तथा विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में कुछ कमी का अनुभव होता है।

कर्क लग्न : द्वादशभाव : मंगल

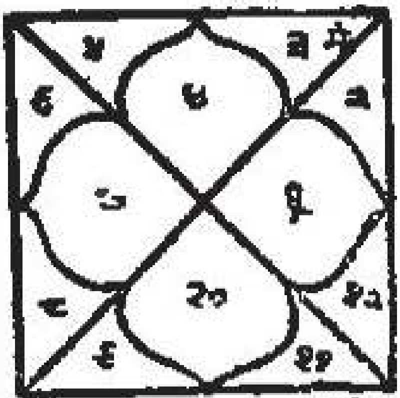

७८८

चौथी मित्रदृष्टि से तृतीयभाव को देखने से भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में वृद्धि होती है।

सातवीं मित्र दृष्टि के षष्ठभाव को देखने से शत्रु-पक्ष में विजय मिलती है। आठवीं उच्च-दृष्टि के सप्तमभाव को देखने के स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता मिलती है। परन्तु बुद्धिभ्रम तथा मस्तिष्क में परेशानी की स्थिति भी बनी रहती है।

'कर्क' लग्न में 'बुध'

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'प्रथम भाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

कर्क लग्न : प्रथम भाव : बुध

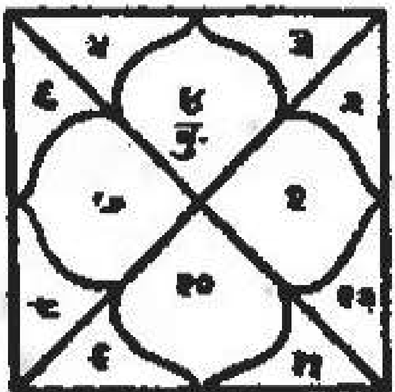

७८९

पहले भाव में शत्रु चन्द्रमा की राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक का शरीर दुर्बल रहता है तथा भाई-बहिन के सुख में कमी आती है, परन्तु पराक्रम एवं प्रभाव में वृद्धि होती है। बाहरी संबंधों से लाभ होता है तथा खर्च अधिक रहता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से सप्तमभाव को देखने से सामान्य त्रुटियों के साथ स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता प्राप्त होती है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

कर्क लग्न : द्वितीयभाव बुध

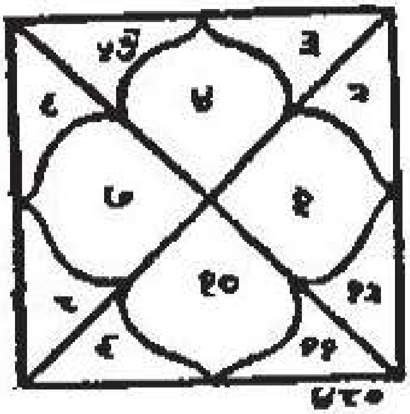

दूसरे भाव में मित्र सूर्य की राशि पर स्थित व्ययेश गुरु के प्रभाव से जातक को धन-संचय के लिए अधिक प्रयत्न करना पड़ता है। भाई-बहिन के सुख में कुछ कमी रहती है, परन्तु पराक्रम में वृद्धि होती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु का पूर्ण सुख मिलता है, परन्तु पुरातत्त्व का लाभ अपूर्ण रहता है। दैनिक जीवन सुखी तथा प्रभावशाली रहता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

कर्क लग्न : तृतीयभाव : बुध

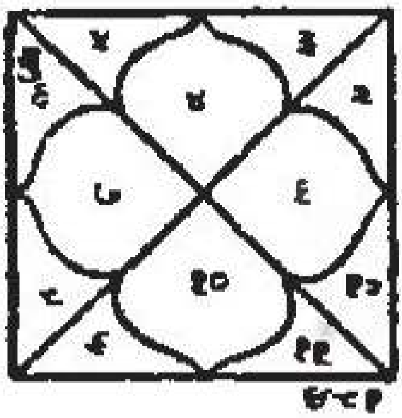

तीसरे भाव में स्वराशि-स्थित बुध के प्रभाव से जातक के पराक्रम में वृद्धि होती है, परन्तु भाई-बहिन के सुख में कुछ कमी आती है।

सातवीं नीच-दृष्टि से नवमभाव को देखने से भाग्य कमजोर रहता है तथा धर्म में भी विशेष रुचि नहीं होती। ऐसे व्यक्ति को अपयश भी उठाना पड़ता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

कर्क लग्न : चतुर्थभाव : बुध

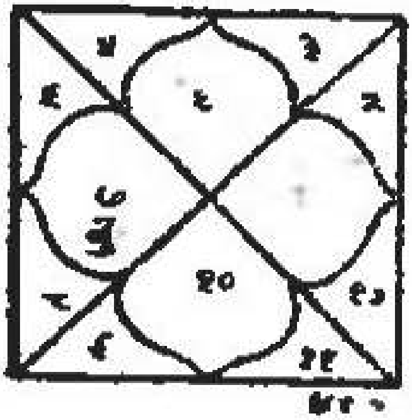

चौथे भाव में मित्र शुक्र की राशि पर स्थित बुध के प्रभाव के जातक की माता, भूमि तथा भवन के सुख में कुछ त्रुटिपूर्ण सफलता मिलती है, परन्तु भाई-बहिन का सुख प्राप्त होता है तथा बाहरी सम्बन्धों से लाभ एवं सुख मिलता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सामान्य सफलताएँ मिलती हैं।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

कर्क लग्न : पंचमभाव : बुध

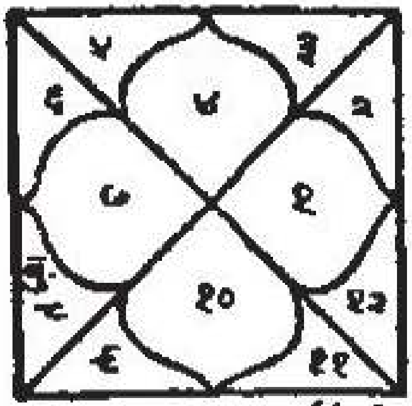

४८३

पाँचवें भाव में मित्र मंगल की राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक को विद्या तथा सन्तान के क्षेत्र में त्रुटिपूर्ण सफलता मिलती है। ऐसा व्यक्ति बुद्धिमान तथा हिम्मती होता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से एकादशभाव को देखने से बुद्धि-बल द्वारा लाभ होता है तथा बाहरी सम्बन्धों से सुख प्राप्त होता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

कर्क लग्न : षष्ठभाव : बुध

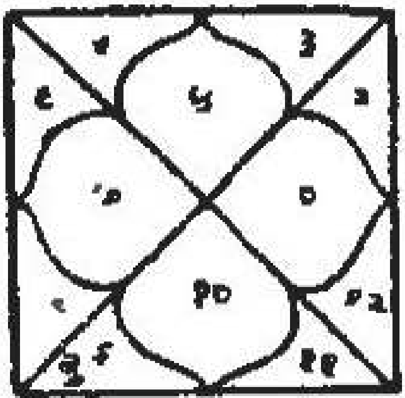

४८४

छठे भाव में मित्र गुरु की राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक शत्रु-पक्ष में नम्रता एवं शांति के आश्रय से सफलता प्राप्त करता है। भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में कुछ कमी रहती है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि वाले द्वादशभाव को देखने के कारण खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों से सामान्य सम्बन्ध बना रहता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

कर्क लग्न : सप्तमभाव : बुध

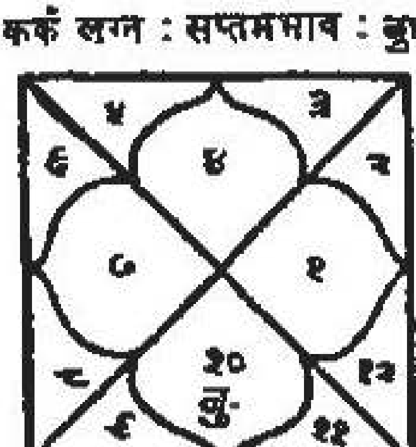

४८५

सातवें भाव में मित्र शनि की राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक को स्त्री का सुख मिलता है तथा व्यवसाय में भी सफलता प्राप्त होती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से प्रथमभाव को देखने के कारण जातक के शरीर में शक्ति तथा दुर्बलता का सामंजस्य रहता है। ऐसा व्यक्ति अधिक खर्चीला होता है तथा बाहरी सम्बन्धों एवं परिश्रम के बल पर उन्नति भी करता है।

``

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

कर्क लग्न : अष्टमभाव : बुध

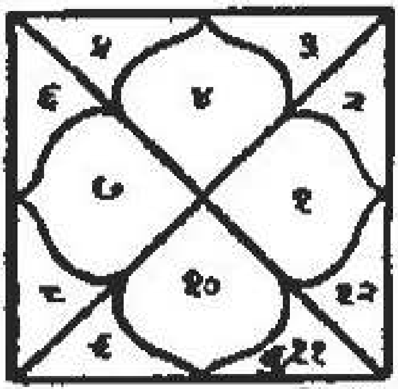

४८६

आठवें भाव में शनि की राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक की आयु तथा पुरातत्त्व का कुछ कमियों के साथ लाभ होता है। भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में कुछ कमी आती है। बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से खर्च चलता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से धन का लाभ होता है, परन्तु सुख के व्ययेश होने के कारण खर्च अधिक बना रहता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

कर्क लग्न : नवमभाव : गुरु

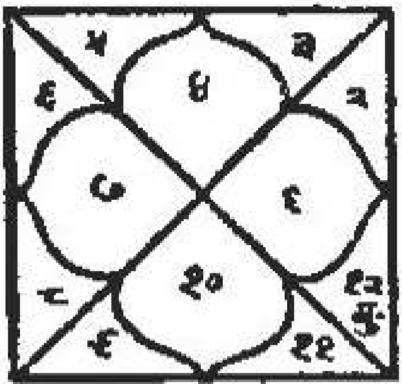

४८७

नवें भाव में मित्र गुरु की राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक की धर्म तथा भाग्योन्नति के क्षेत्र में कुछ त्रुटिपूर्ण सफलता मिलती है। बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से सामान्य लाभ होता है। खर्च अधिक रहता है।

सातवीं उच्च दृष्टि से तृतीयभाव को देखने के कारण पुरुषार्थ की वृद्धि होती है, परन्तु भाग्योन्नति में बाधाएँ भी आती रहती हैं।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

कर्क लग्न : दशमभाव : बुध

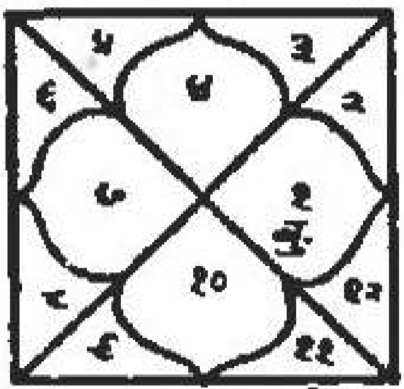

४८८

दसवें भाव में मित्र मंगल की राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में त्रुटिपूर्ण सफलताएँ मिलती हैं, परन्तु भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम की वृद्धि होती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से चतुर्थभाव को देखने के कारण माता, भूमि एवं भवन आदि का सामान्य लाभ होता है तथा परिश्रम द्वारा खर्च चलता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

कर्क लग्न : एकादशभाव : बुध

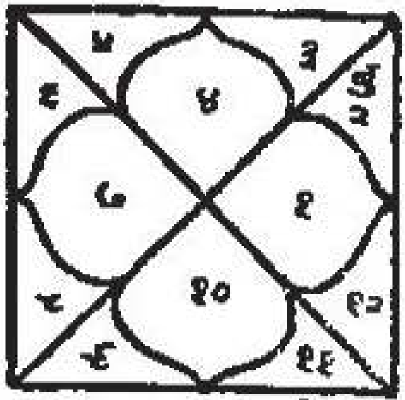

४८९

ग्यारहवें भाव में मित्र शुक्र की राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक की आमदनी अच्छी रहती है। बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से भी लाभ होता है, परन्तु खर्च अधिक बना रहता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से पंचम भाव को देखने से सन्तान, विद्या तथा बुद्धि के क्षेत्र में त्रुटिपूर्ण लाभ होता है, परन्तु जातक अपनी बुद्धि, विवेक-शक्ति तथा वाणी के बल पर लाभ कमाता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

कर्क लग्न : द्वादशभाव : बुध

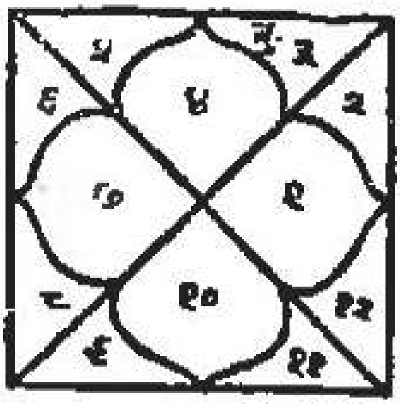

४९०

बारहवें भाव में स्वराशिस्थ बुध के प्रभाव के जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होता है। भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में कमी रहती है।

सातवीं मित्रदृष्टि से षष्ठभाव को देखने के कारण शान्त स्वभाव, पुरुषार्थ एवं व्यय की शक्ति से शत्रुपक्ष में सामान्य सफलता मिलती है। ऐसा व्यक्ति धन खर्च करने के बल पर ही अनेक कठिनाइयों पर नियन्त्रण स्थापित कर पाता है।

'कर्क' लग्न में 'गुरु'

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'प्रथम भाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

कर्क लग्न : प्रथमभाव : गुरु

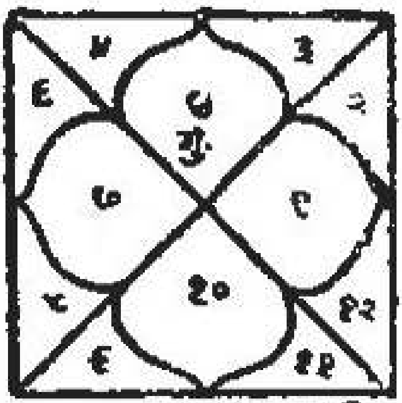

४९१

पहले भाव में मित्र चन्द्रमा की राशि पर स्थित उच्च के गुरु के प्रभाव से जातक को शारीरिक सौन्दर्य एवं प्रभाव की प्राप्ति होती है। पाँचवीं मित्रदृष्टि से पंचमभाव को देखने से सन्तान, विद्या तथा बुद्धि का पूर्ण सुख मिलता है।

सातवीं नीच दृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री पक्ष तथा दैनिक खर्च में कठिनाइयाँ बनी रहती हैं। नवीं दृष्टि से स्वराशि में नवमभाव को देखने से भाग्य की शक्ति प्रबल रहती है तथा धर्म का लाभ भी होता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

कर्क लग्न : द्वितीयभाव : गुरु

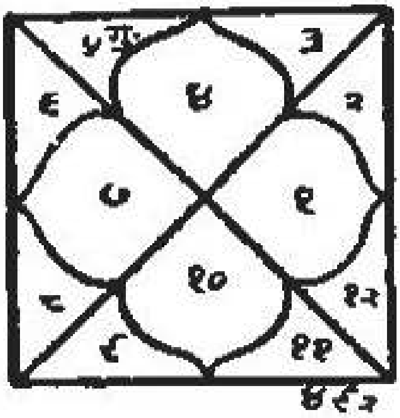

दूसरे भाव में मित्र सूर्य की राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को धन तथा कुटुम्ब का पर्याप्त सुख मिलता है। पाँचवीं दृष्टि से स्वराशि के षष्ठभाव को देखने से धन की शक्ति द्वारा शत्रु पक्ष पर विजय मिलती है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है। नवीं मित्र-दृष्टि से दशमभाव को देखने से राज्य, पिता तथा व्यवसाय के क्षेत्र में यश, धन, सहयोग तथा सफलता का लाभ होता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

कर्क लग्न : तृतीयभाव : गुरु

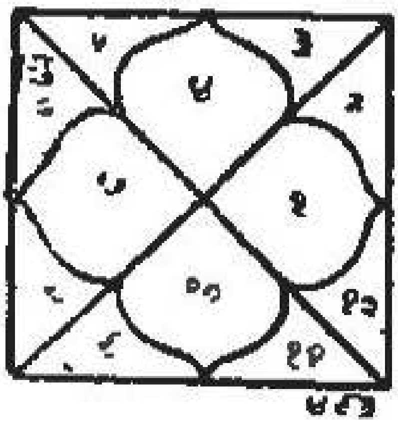

तीसरे भाव में मित्र बुध की राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक के पराक्रम में वृद्धि होती है तथा भाई-बहिन का सुख मिलता है। पाँचवीं नीच दृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री एवं व्यवसाय के क्षेत्र में हानि तथा क्लेश का शिकार बनना पड़ता है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में नवमभाव को देखने से धर्म तथा भाग्य की वृद्धि होती है। नवीं शत्रु-दृष्टि से एकादशभाव को देखने से कुछ कठिनाइयों के साथ लाभ होता रहता है। ऐसा व्यक्ति धर्मात्मा, धनी, हिम्मती तथा शत्रुजयी होता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

कर्क लग्न : चतुर्थभाव : गुरु

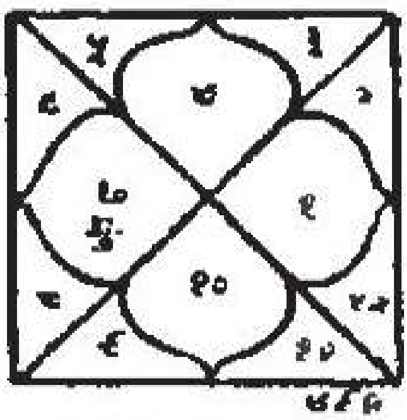

चौथे भाव में शत्रु शुक्र की राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को माता, भूमि तथा भवन के क्षेत्र में त्रुटिपूर्ण लाभ होता है। शत्रु पक्ष में शान्ति से सफलता मिलती है। पाँचवीं शत्रु-दृष्टि से अष्टम-भाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व के क्षेत्र में कुछ असन्तोष रहता है।

सातवीं मित्र दृष्टि से दशमभाव को देखने से राज्य, पिता एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता मिलती है। नवीं मित्र दृष्टि से द्वादश भाव को देखने के कारण बाहरी संबंधों से लाभ होता है, परन्तु खर्च अधिक रहता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

कर्क लग्न : पंचमभाव : गुरु

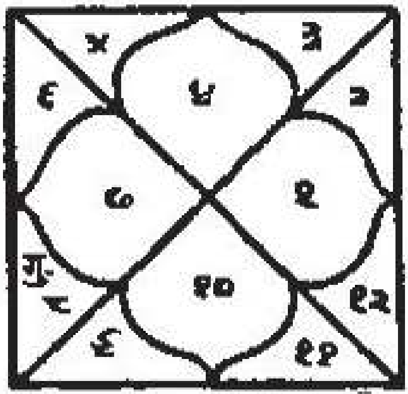

४६५

पाँचवें भाव में मित्र मंगल की राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को विद्या, बुद्धि तथा सन्तान के क्षेत्र में विशेष सफलता मिलती है। पाँचवीं दृष्टि से स्वराशि में नवमभाव को देखने से बुद्धि तथा सन्तान के सहयोग से भाग्य तथा धर्म की वृद्धि होती है।

सातवीं शत्रु दृष्टि से एकादशभाव को देखने से लाभ के क्षेत्र में कुछ कमी रहती है। नवीं मित्र दृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्य, आत्मबल तथा यश की वृद्धि होती है। गुरु के षष्ठेश होने के कारण जातक को प्रत्येक क्षेत्र में कुछ परेशानियों के बाद ही सफलता मिलती है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

कर्क लग्न : षष्ठभाव : गुरु

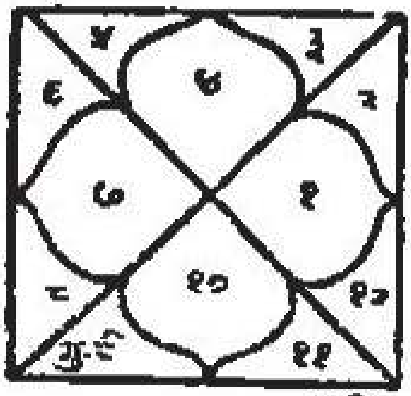

४६६

छठे भाव में स्वराशि स्थित गुरु के प्रभाव से जातक अपने शत्रुओं पर अत्यधिक प्रभाव स्थापित करता है तथा यशस्वी होता है। परन्तु भाग्योन्नति में कुछ कठिनाइयाँ आती हैं। पाँचवीं मित्र-दृष्टि से दशमभाव को देखने के कारण पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता मिलती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से द्वादशभाव को देखने के कारण बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होता है तथा खर्च अधिक रहता है। नवीं मित्र-दृष्टि से द्वितीयभाव को देखने के कारण धन तथा कुटुम्ब का लाभ होता है। ऐसा व्यक्ति धनी, सुखी तथा यशस्वी होता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

कर्क लग्न : सप्तमभाव : गुरु

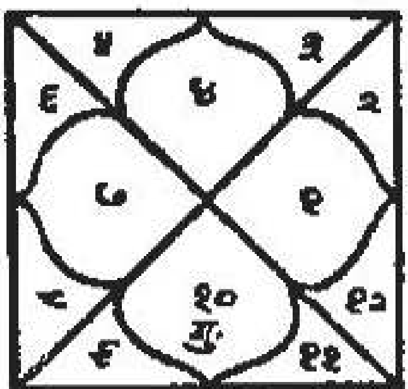

४६७

सातवें भाव में शत्रु शनि की राशि पर स्थित नीच के गुरु के प्रभाव से जातक को स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाइयाँ आती हैं तथा शत्रु पक्ष से व्यवसाय को हानि पहुँचती है। पाँचवीं शत्रु-दृष्टि से एकादशभाव को देखने से परिश्रम द्वारा लाभ होता है।

सातवीं उच्च दृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्य तथा प्रभाव में वृद्धि होती है। नवीं मित्र-दृष्टि से तृतीयभाव को देखने से पराक्रम बढ़ता है तथा भाई-बहिन का सुख भी मिलता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

कर्क लग्न : अष्टमभाव : गुरु

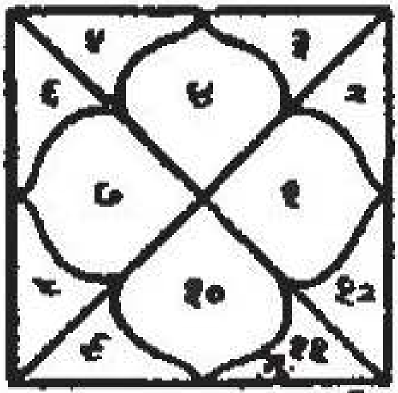

४९८

आठवें भाव में शत्रु शनि की राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को आयु तथा पुरातत्त्व का त्रुटिपूर्ण लाभ होता है, परन्तु शत्रु पक्ष से अशान्ति मिलती है तथा भाग्य पक्ष दुर्बल रहता है। पाँचवीं मित्र-दृष्टि से द्वादशभाव को देखने के कारण खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी संबंधों से लाभ भी होता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से धन तथा कुटुम्ब की वृद्धि होती है। नवीं शत्रु-दृष्टि से चतुर्थभाव को देखने के कारण माता, भूमि तथा भवन के सुख में कुछ कमी रहती है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

कर्क लग्न : नवमभाव : गुरु

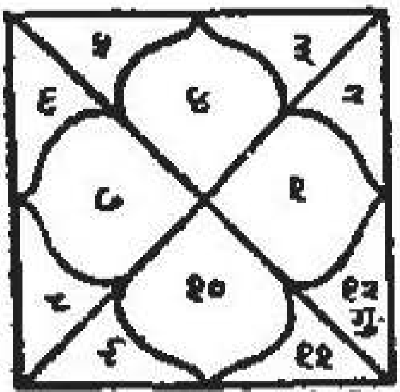

४९९

नवें भाव में स्वराशि-स्थित गुरु के प्रभाव से जातक के भाग्य तथा धर्म की वृद्धि होती है। पाँचवीं उच्च दृष्टि से प्रथम भाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्य तथा प्रभाव में वृद्धि होती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से तृतीय भाव को देखने से भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में वृद्धि होती है। नवीं मित्र-दृष्टि से पंचमभाव को देखने से विद्या-बुद्धि एवं सन्तान के पक्ष में भी विशेष सफलता मिलती है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

कर्क लग्न : दशमभाव : गुरु

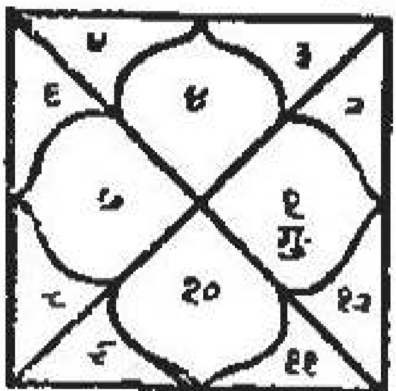

५००

दसवें भाव में मित्र मंगल की राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में पूर्ण सफलता, सुख तथा सम्मान की प्राप्ति होती है। पाँचवीं मित्र-दृष्टि से द्वितीय भाव को देखने से धन-कुटुम्ब की वृद्धि होती है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से कुछ असन्तोष के साथ माता, भूमि तथा भवन का पर्याप्त सुख मिलता है। नवीं दृष्टि से स्वराशि में षष्ठभाव को देखने से शत्रु-पक्ष पर प्रभाव बना रहता है। ऐसा व्यक्ति परिश्रम तथा झगड़ों के द्वारा उन्नति करता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

कर्क लग्न : एकादशभाव : गुरु

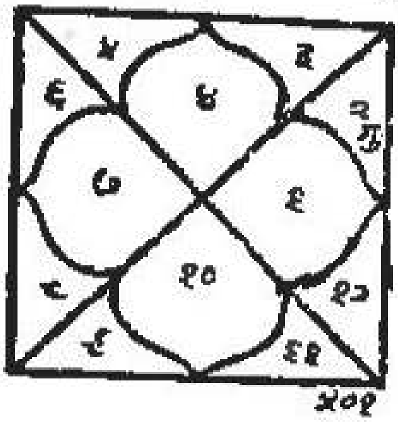

ग्यारहवें भाव में शत्रु शुक्र की राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक परिश्रम द्वारा लाभ कमाता है तथा उसे शत्रु पक्ष से भी लाभ होता है। पाँचवी मित्र-दृष्टि से तृतीयभाव को देखने से भाई-बहिनों का सुख सामान्य कमी के साथ मिलता है तथा पराक्रम में वृद्धि होती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से पंचमभाव को देखने से विद्या, बुद्धि तथा सन्तान के क्षेत्र में सफलता मिलती है। नवीं नीच दृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में असन्तोष एवं हानि का सामना करना पड़ता है। ऐसा व्यक्ति धनी अवश्य होता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

कर्क लग्न : द्वादशभाव : गुरु

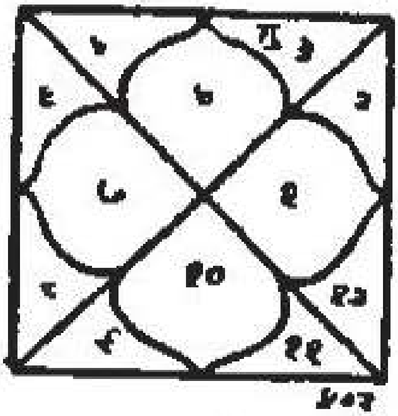

बारहवें भाव में मित्र बुध की राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को बाहरी सम्बन्धों से लाभ होता है तथा खर्च अधिक रहता है। भाग्य तथा धर्म के क्षेत्र में कमी रहती है। पाँचवीं शत्रु दृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि तथा भवन का सुख बड़े परिश्रम द्वारा मिलता है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में षष्ठ भाव को देखने से शत्रुपक्ष में सफलता मिलती है। नवीं शत्रु-दृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व का सामान्य लाभ होता है।

'कर्क' लग्न में 'शुक्र'

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

कर्क लग्न : प्रथमभाव : शुक्र

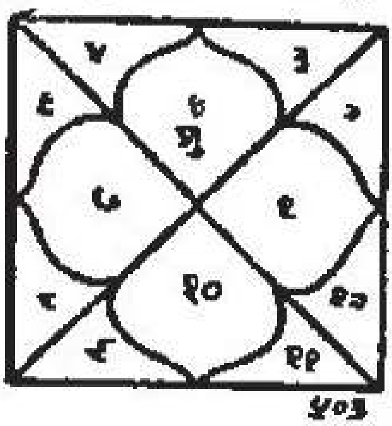

पहले भाव में शत्रु चन्द्रमा की राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक को शारीरिक सौन्दर्य, सुख तथा चातुर्य का लाभ होता है। माता तथा भूमि का सुख भी मिलता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी लाभ होता है तथा भोगादि में खूब रुचि बनी रहती है। ऐसा जातक सुखी, धनी, विलासी तथा ऐश्वर्यशाली होता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

कर्क लग्न : द्वितीयभाव : शुक्र

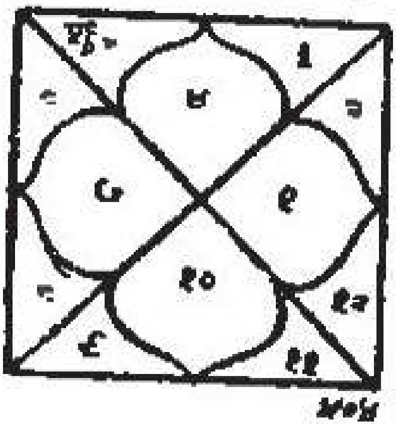

दूसरे भाव में शत्रु सूर्य की राशि पर स्थित सुख के प्रभाव से जातक को धन-कुटुम्ब का सामान्य असन्तोष के लाभ सुख प्राप्त होता है तथा भूमि एवं भवन का सुख भी मिलता है। माता के सुख में कुछ कमी रहती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु में वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का लाभ भी होता है। ऐसा जातक धनी तथा सुखी जीवन बिताता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

कर्क लग्न : तृतीयभाव : शुक्र

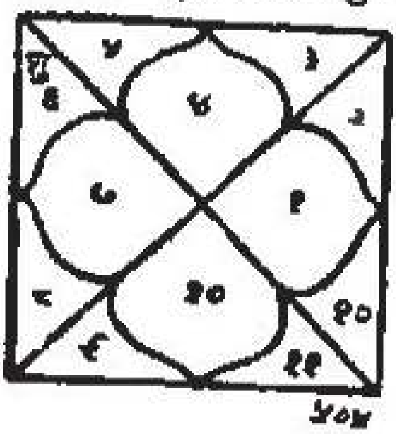

तीसरे भाव में मित्र बुध की राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक के भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में कमी रहती है। माता के सुख में भी कमी का अनुभव होता है।

सातवीं उच्च दृष्टि से नवमभाव को देखने से भाग्य की श्रेष्ठ वृद्धि होती है तथा धर्म का पालन भी होता है। ऐसा व्यक्ति अपनी भीतरी कमजोरियों को छिपाकर प्रकट में हिम्मती बना रहता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

कर्क लग्न : चतुर्थभाव : शुक्र

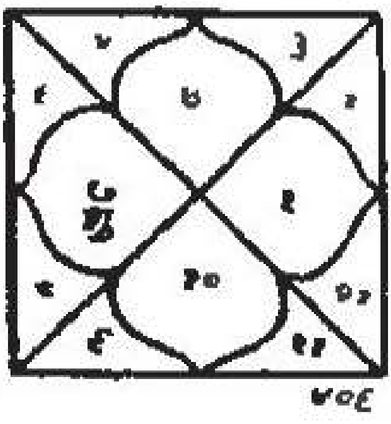

चौथे भाव में स्वराशि-स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक को माता, भूमि तथा भवन का पर्याप्त सुख मिलता है। आय में वृद्धि होने से वह धनी भी बनता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से सप्तमभाव को देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में भी सफलता, सुख, यश एवं धन की प्राप्ति होती है। ऐसा व्यक्ति बड़ा चतुर, प्रतिष्ठित तथा धनी होता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

कर्क लग्न : पंचमभाव : शुक्र

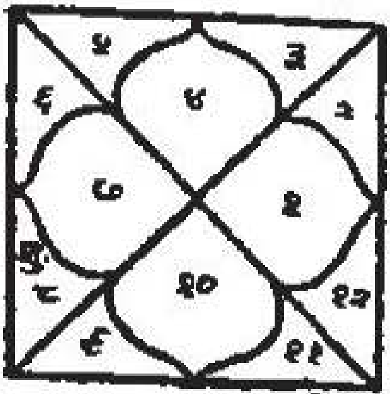

५०७

पाँचवें भाव में सामान्य मित्र मंगल की राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक को विद्या, बुद्धि तथा सन्तान का यथेष्ट लाभ होता है। सातवीं दृष्टि से स्वराशि में एकादशभाव को देखने से आमदनी भी अच्छी रहती है तथा धन का लाभ खूब होता है।

ऐसे व्यक्ति की माता, भूमि तथा भवन का सुख भी मिलता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

कर्क लग्न : षष्ठभाव : शुक्र

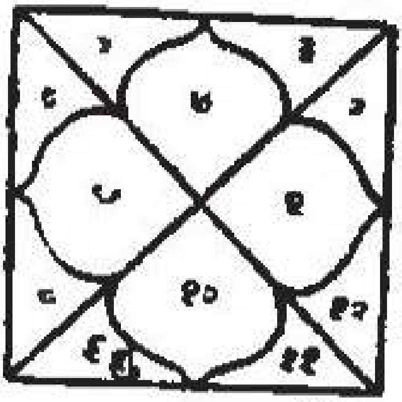

५०८

छठे भाव में शत्रु गुरु की राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक को शत्रु-पक्ष में विजय मिलती है, परन्तु माता, भूमि तथा भवन के सुख में कुछ कमी तथा अशान्ति भी रहती है। लाभ के मार्ग में भी परतन्त्रता का योग बनता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से द्वादशभाव को देखने के कारण बाहरी सम्बन्धों से सुख तथा लाभ मिलता है तथा खर्च अधिक रहता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

कर्कलग्न : सप्तमभाव : शुक्र

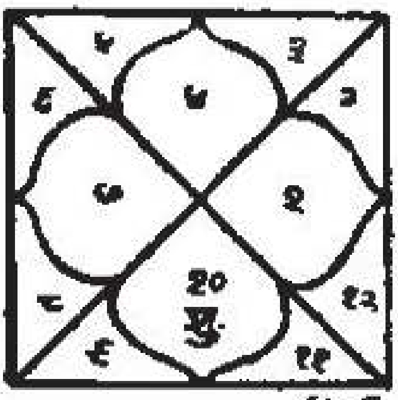

५०९

सातवें भाव में मित्र शनि की राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक को स्त्री, व्यवसाय तथा दैनिक आय के क्षेत्र में सफलता मिलती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से प्रथमभाव को देखने से जातक को शारीरिक सौन्दर्य, प्रभाव, चातुर्य एवं सुख की प्राप्ति भी होती है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

कर्क लग्न : अष्टमभाव : शुक्र

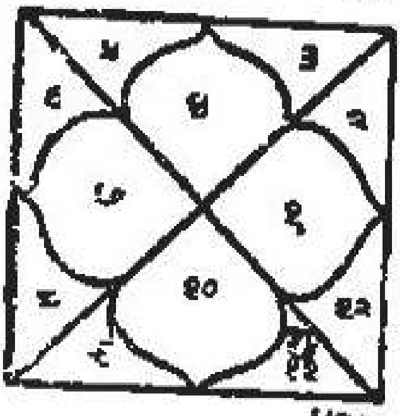

आठवें भाव में मित्र शनि की राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक को आयु एवं पुरातत्व का लाभ होता है तथा परदेश में रहकर उन्नति करता है। घरेलू सुख में कुछ कमी भी रहती है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से द्वितीयभाव को देखने के कारण धन-संचय नहीं हो पाता तथा कौटुम्बिक सुख में भी कमी रहती है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

कर्क लग्न : नवमभाव : शुक्र

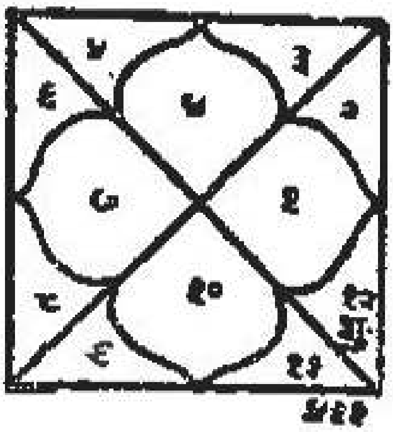

नवें भाव में शत्रु गुरु की राशि पर स्थित उच्च शुक्र के प्रभाव से जातक के धर्म तथा भाग्य की विशेष वृद्धि होती है। माता, भूमि तथा भवन का उत्तम सुख भी मिलता है।

सातवीं दृष्टि से तृतीयभाव को देखने से भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में कुछ कमी रहती है। ऐसा व्यक्ति भाग्यवादी, धनी सुखी तथा सौभाग्यशाली होता है।

कर्क लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

कर्क लग्न : दशमभाव : शुक्र

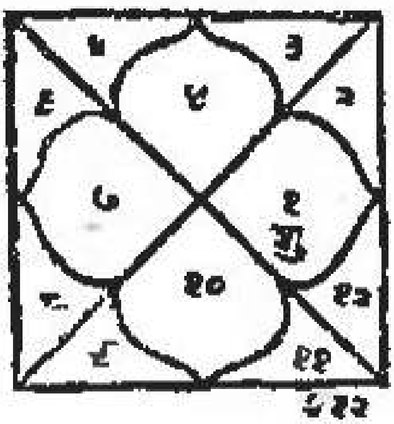

दसवें भाव में सामान्य मित्र मंगल की राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में पूर्ण सफलताएँ मिलती है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि तथा भवन का सुख भी प्रचुर मात्रा में उपलब्ध होता है। ऐसा व्यक्ति धनी, सुखी, गंभीर, चतुर, बुद्धिमान, शृंगार-प्रिय, प्रेमी तथा ऐश्वर्यशाली होता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

'कर्क' लग्न : एकादशभाव : शुक्र

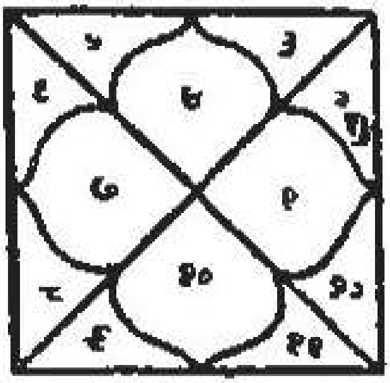

ग्यारहवें भाव में स्वक्षेत्री शुक्र के प्रभाव से जातक को आमदनी अच्छी रहती है तथा माता, भूमि, भवन आदि का सुख भी मिलता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से पंचमभाव को देखने के कारण विद्या, बुद्धि तथा सन्तान के क्षेत्र में भी पूर्ण सफलता मिलती है। ऐसा व्यक्ति योग्य, चतुर, धनी, सुखी तथा श्रेष्ठवाणी बोलनेवाला होता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

कर्क लग्न : द्वादशभाव : शुक्र

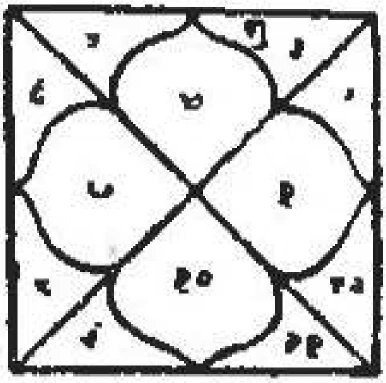

बारहवें भाव में मित्र बुध की राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से सुख एवं लाभ उठाता है तथा उसका खर्च अधिक रहता है। माता, भूमि तथा भवन के सुख में कमी आती है तथा मातृभूमि से अलग भी रहना पड़ता है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से षष्ठभाव को देखने से शत्रु पक्ष में चातुर्य एवं खर्च से काम निकालने में सफलता मिलती है।

'कर्क' लग्न में 'शनि'

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

कर्क लग्न : प्रथमभाव : शनि

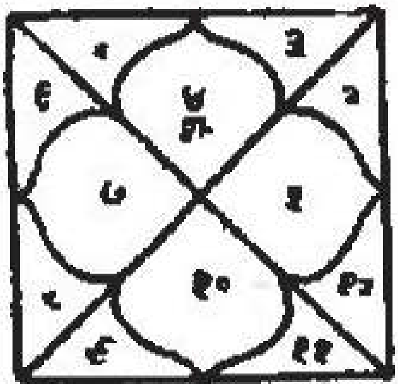

पहले भाव में शत्रु चन्द्रमा की राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक के शारीरिक सौन्दर्य में कुछ कमी आती है तथा शरीर में रोग भी रहता है। तीसरी मित्र-दृष्टि से तृतीयभाव को देखने से भाई-बहिन का त्रुटिपूर्ण सुख मिलता है, परन्तु पराक्रम में वृद्धि होती है।

सातवीं दृष्टि से स्वक्षेत्र में सप्तमभाव को देखने से व्यावसायिक क्षेत्र में सफलता मिलती है तथा स्त्री का सुख होने पर भी उससे कुछ परेशानी रहती है। दसवीं नीच-दृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता तथा राज्य के क्षेत्र में सफलता एवं सम्मान का सामान्य लाभ होता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

कर्क लग्न : द्वितीयभाव : शनि

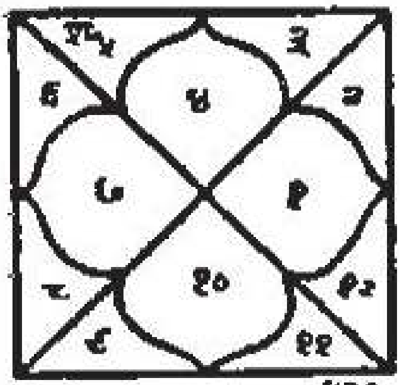

४९६

दूसरे भाव में शत्रु सूर्य की राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक को धन तथा कुटुम्ब के क्षेत्र में हानि पहुँचती है। तीसरी उच्च दृष्टि से चतुर्थ भाव को देखने से माता, भूमि तथा भवन का सुख मिलता है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में अष्टमभाव को देखने से आयु-वृद्धि तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है। दसवीं मित्र-दृष्टि से एकादशभाव को देखने से परिश्रम द्वारा धन का लाभ होता है। ऐसा व्यक्ति अमीरी ढंग का जीवन तो बिताता है, परन्तु धन तथा पारिवारिक सुख में कमी ही बनी रहती है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

कर्क लग्न : तृतीयभाव : शनि

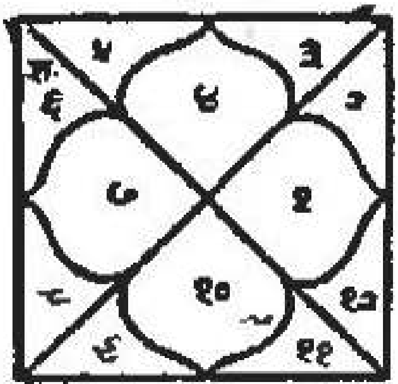

४९७

तीसरे भाव में मित्र बुध की राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक के पराक्रम में वृद्धि होती है, परन्तु भाई-बहिनों द्वारा परेशानी भी मिलती है। तीसरी शत्रु-दृष्टि से पंचमभाव को देखने से सन्तान से कष्ट मिलता है तथा विद्या-बुद्धि की कमी रहती है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से नवमभाव को देखने से भाग्य में रुकावटें आती हैं तथा धर्म में अरुचि रहती है। बारहवीं मित्र-दृष्टि से द्वादशभाव को देखने से बाहरी सम्बन्धों से लाभ होता है, परन्तु खर्च अधिक रहता है। ऐसा व्यक्ति कुछ क्रोधी स्वभाव का होता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

कर्क लग्न : चतुर्थभाव : शनि

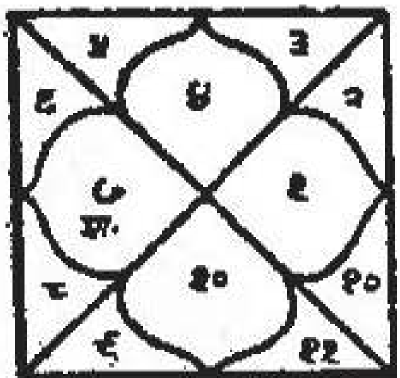

४९८

चौथे भाव में मित्र शुक्र की राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से माता के सुख में कुछ कमी आती है, परन्तु भूमि, भवन का यथेष्ट सुख मिलता है। तीसरी शत्रु-दृष्टि से षष्ठभाव को देखने से शत्रु-पक्ष में प्रभाव रहता है।

सातवीं नीच-दृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाइयाँ आती हैं। दसवीं शत्रु-दृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शरीर में आलस्य तथा रोग रहता है तथा घरेलू सुख में भी कुछ कमी आती है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

कर्क लग्न : पंचमभाव : शनि

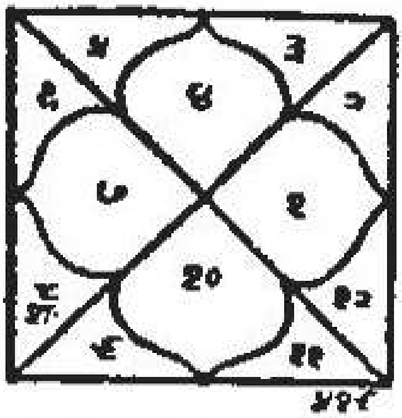

पाँचवें भाव में शत्रु मंगल की राशि में स्थित शनि के प्रभाव से जातक को सन्तान, विद्या एवं बुद्धि के क्षेत्र में कठिनाइयाँ आती हैं। तीसरी दृष्टि से स्वराशि में सप्तमभाव को देखने से बुद्धिमती स्त्री मिलती है, परन्तु उसके कारण कुछ कष्ट भी होता है। व्यवसाय में भी बुद्धि-योग से सफलता मिलती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से एकादशभाव को देखने से आमदनी अच्छी रहती है। दसवीं शत्रु-दृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से धन-संचय में कमी रहती है तथा कुटुम्ब द्वारा भी परेशानियाँ उठानी पड़ती हैं।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

कर्क लग्न : षष्ठभाव : शनि

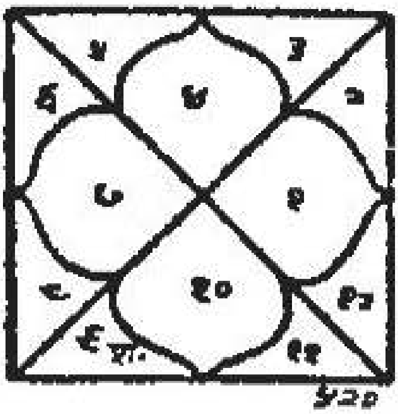

छठे भाव में शत्रु गुरु की राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक शत्रु-पक्ष में प्रभाव बनाये रखता है परन्तु स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयों के बाद ही सफलता मिलती है। तीसरी दृष्टि में स्वराशि में अष्टमभाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व की शक्ति बढ़ती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से द्वादशभाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी सम्बन्धों से लाभ होता है। दसवीं मित्र-दृष्टि से तृतीय भाव को देखने से पराक्रम में वृद्धि होती है, परन्तु भाई-बहिन से वैमनस्य रहता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

कर्क लग्न : सप्तमभाव : शनि

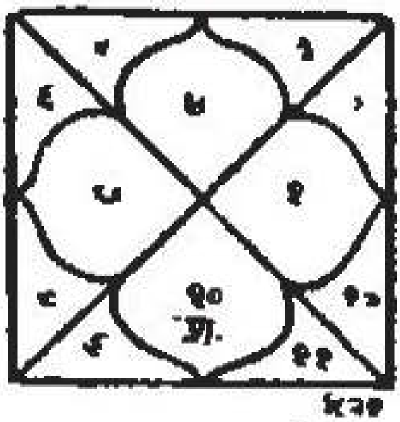

सातवें भाव में स्वराशि-स्थित शनि के प्रभाव से जातक को स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता मिलती है तथा भोगादि के सुख भी खूब मिलते हैं। तीसरी शत्रु-दृष्टि से नवमभाव को देखने से भाग्य एवं धर्म के क्षेत्र में कुछ कमी रहती है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्य एवं स्वास्थ्य में कमी आती है। दसवीं उच्च-दृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि तथा भवन का पर्याप्त सुख मिलता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

कर्क लग्न : अष्टमभाव : शनि

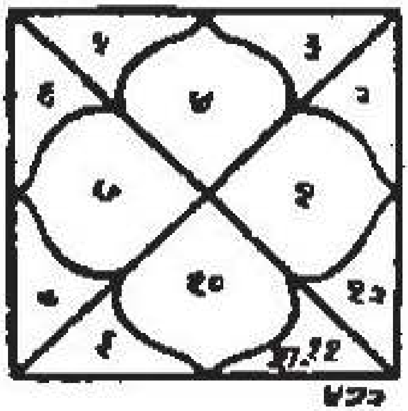

आठवें भाव में स्वराशि-स्थित शनि के प्रभाव से जातक की आयु बढ़ती है तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है, परन्तु स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में परेशानियाँ बनी रहती हैं। बाहरी स्थान के संबंध से शक्ति भी मिलती है।

तीसरी नीच-दृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में परेशानी रहती है। सातवीं शत्रु-दृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से धन-संचय तथा कुटुम्ब-सुख में कमी आती है। दसवीं शत्रु-दृष्टि से पंचमभाव को देखने से विद्या, बुद्धि एवं सन्तान के क्षेत्र में भी कठिनाइयों का अनुभव होता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

कर्क लग्न : नवमभाव : शनि

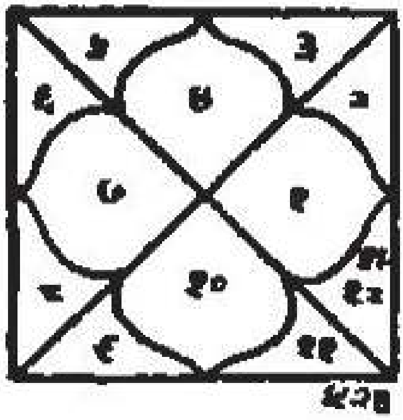

नवें भाव में शत्रु गुरु की राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक को धर्म-पालन तथा भाग्योन्नति के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयाँ आती हैं, परन्तु आयु की वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का सामान्य लाभ होता है। तीसरी मित्र-दृष्टि से एकादशभाव को देखने से आमदनी बढ़ती है। सातवीं मित्र-दृष्टि से तृतीयभाव को देखने से पराक्रम में वृद्धि होती है तथा भाई-बहिन के सुख में कुछ कमी रहती है। दसवीं शत्रु-दृष्टि से षष्ठभाव को देखने से कुछ कठिनाइयों के बाद शत्रु-पक्ष पर प्रभाव स्थापित होता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

कर्क लग्न : दशमभाव : शनि

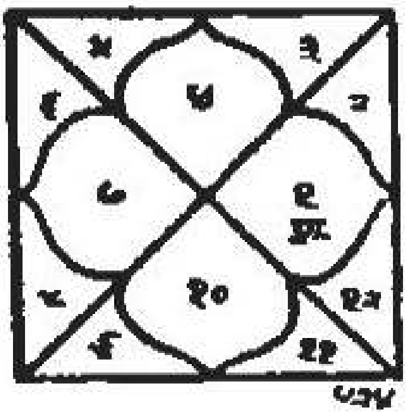

दसवें भाव में शत्रु मंगल की राशि पर स्थित नीच के मंगल के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाइयाँ आती रहती हैं। पुरातत्त्व तथा आयु की हानि भी होती है। तीसरी मित्र-दृष्टि से द्वादशभाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों से लाभ मिलता है।

सातवीं उच्चदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि तथा भवन आदि का सुख मिलता है। दसवीं दृष्टि से स्वराशि में सप्तमभाव को देखने से स्त्री तथा दैनिक व्यवसाय के क्षेत्र में लाभ होता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'एकादश भाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

कर्क लग्न : एकादशभाव : शनि

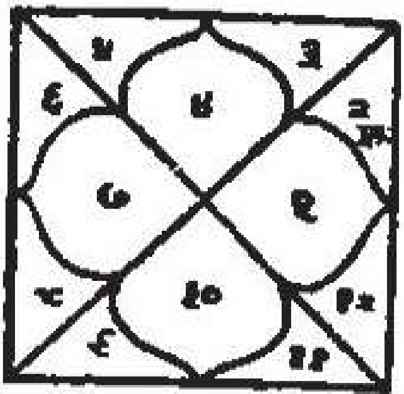

५२५

ग्यारहवें भाव में मित्र शुक्र की राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक की आमदनी अच्छी रहती है। स्त्री तथा व्यवसाय पक्ष में भी लाभ होता है। तीसरी शत्रु-दृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्य में कमी आती है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से पंचम भाव को देखने से विद्या, बुद्धि एवं सन्तान के क्षेत्र में कुछ कष्ट रहता है। दसवीं दृष्टि से स्वराशि में अष्टमभाव को देखने से आयु बढ़ती है तथा पुरातत्व का लाभ भी होता है। ऐसा जातक कम पढ़ा-लिखा होने पर भी अपने चातुर्य एवं परिश्रम द्वारा सुखी जीवन व्यतीत करता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

कर्क लग्न : द्वादशभाव : शनि

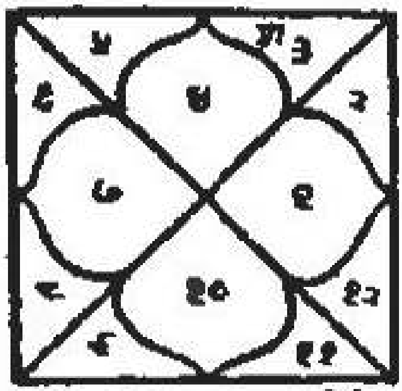

५२६

बारहवें भाव में मित्र बुध की राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक को बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होता है तथा ख़र्च अधिक रहता है। स्त्री, व्यवसाय, आयु तथा पुरातत्व की शक्ति में हानि होती है। तीसरी शत्रु-दृष्टि से द्वितीय-भाव को देखने से धन तथा कुटुम्ब के पक्ष में भी घोर चिन्ताएं बनी रहती हैं।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से षष्ठभाव को देखने के कारण शत्रु उत्पात करते रहते हैं, परन्तु उन पर प्रभाव भी बना रहता है। दसवीं शत्रु-दृष्टि से नवमभाव कोदेखने से धर्म-पालन में कमी रहती है तथा भाग्य की शक्ति भी क्षीण हो जाती है। परन्तु इन सब कठिनाइयों के बावजूद जातक शानदार जीवन व्यतीत करता है।

'कर्क' लग्न में 'राहु'

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

कर्क लग्न : प्रथमभाव : राहु

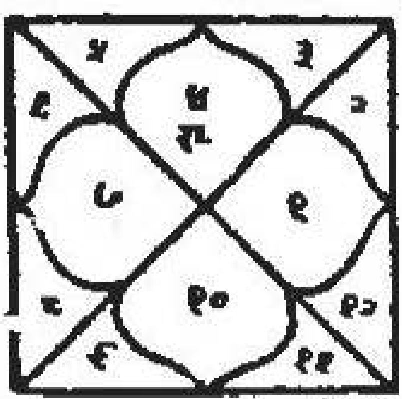

५२७

पहले भाव में शत्रु चन्द्रमा की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक के शारीरिक सौन्दर्य में कमी आती है तथा हृदय चिन्तित बना रहता है। कभी-कभी मृत्युतुल्य कष्टों का सामना भी करना पड़ता है, परन्तु वह गुप्त युक्तियों के बल पर अपने सम्मान को बचाये रखता है तथा उन्नति के लिए कठिन परिश्रम भी करता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

कर्क लग्न : द्वितीयभाव : राहु

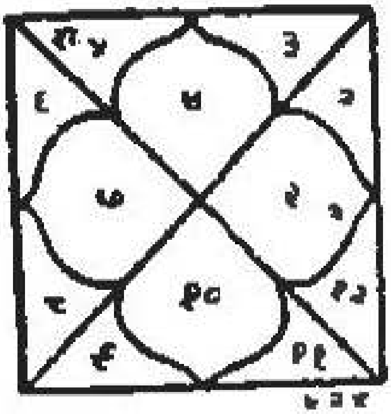

दूसरे भाव में शत्रु सूर्य की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को धन एवं कुटुम्ब के सुख की हानि होती है। वह गुप्त युक्तियों तथा कठिन परिश्रम के बल पर धन की वृद्धि के लिए प्रयत्नशील रहता है और कभी-कभी आकस्मिक धन-लाभ भी प्राप्त करता है। उसे अपनी प्रतिष्ठा की रक्षा के लिए सदैव चिन्तित बने रहना पड़ता है। ऐसा व्यक्ति बड़ा परिश्रमी तथा हिम्मती होता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

कर्क लग्न : तृतीयभाव : राहु

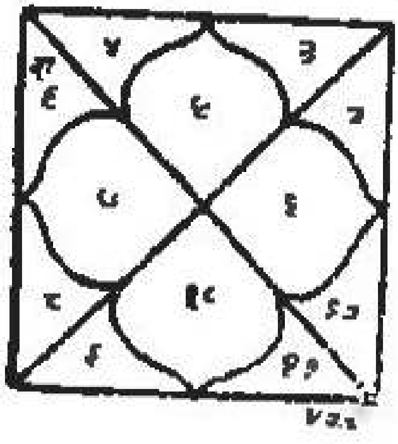

तीसरे भाव में मित्र बुध की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक के पराक्रम की अत्यधिक वृद्धि होती है तथा कुछ कठिनाइयों के साथ भाई-बहिन का सुख भी मिलता है।

ऐसा व्यक्ति अपनी स्वार्थ-सिद्धि के लिए कठिन परिश्रम, गुप्त युक्तियों तथा पुरुषार्थ का सहारा लेता है। भीतरी रूप से कमजोर होने पर भी ऊपर से बड़ा हिम्मती दिखाई देता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

कर्क लग्न : चतुर्थभाव : राहु

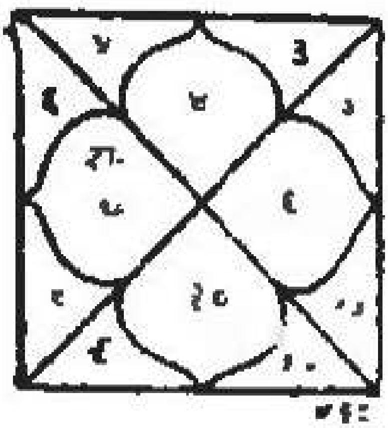

चौथे भाव में मित्र शुक्र की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को माता के सुख में कुछ कमी प्राप्त होती है तथा भूमि और भवन का सुख भी अल्प मात्रा में प्राप्त होता है। उसे देश छोड़ कर परदेश में भी रहना पड़ता है। ऐसा व्यक्ति कभी-कभी असफलताओं का भी विशेष शिकार बनता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

कर्क लग्न : पंचमभाव : राहु

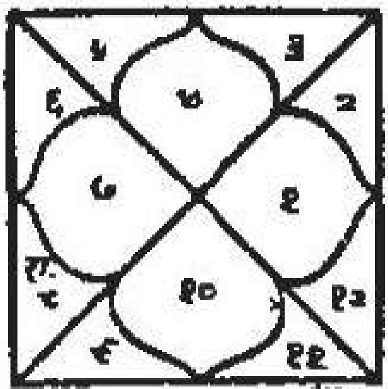

५३०

पाँचवें भाव में शत्रु मंगल की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को विद्याध्ययन में कठिनाई आती है तथा सन्तान-पक्ष से कष्ट होता है। बहुत समय बीत जाने पर ही सन्तान का सुख मिलता है। कम पढ़-लिखा होने पर भी ऐसा व्यक्ति अपनी बातों से बड़े-बड़े बुद्धिमानों को भी प्रभावित करता है। वह स्वभाव से जिद्दी तथा कानून का जानकार भी होता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

कर्क लग्न : षष्ठभाव : राहु

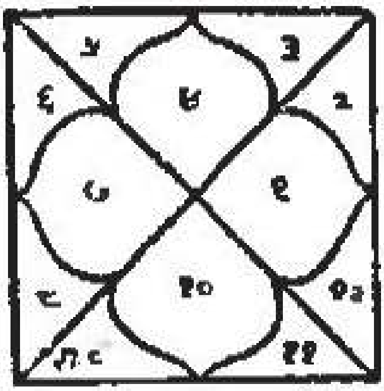

५३१

छठे भाव में शत्रु गुरु की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक के लिए शत्रु-पक्ष द्वारा कठिनाइयाँ उत्पन्न की जाती हैं, परन्तु वह देश-नीति के आश्रय से उनका दमन करने में सफल हो जाता है।

ऐसा व्यक्ति गुप्त युक्तियों का ज्ञाता, चतुर, स्वार्थी तथा पाप-पुण्य की चिन्ता न करने वाला होता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

कर्क लग्न : सप्तमभाव : राहु

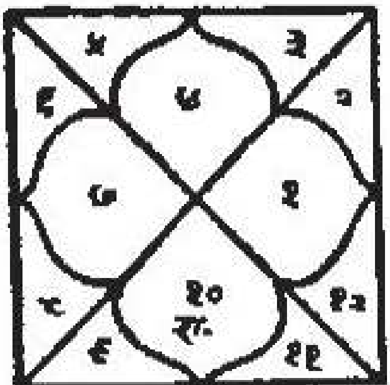

५३२

सातवें भाव में मित्र शनि की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में परेशानियों तथा कठिनाइयों का शिकार होना पड़ता है। उसकी इन्द्रिय में विकार होता है। घरेलू मामलों में उसे कभी-कभी घोर कष्ट उठाना पड़ता है, परन्तु अन्त में सफलता भी प्राप्त कर लेता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

कर्क लग्न : अष्टमभाव : राहु

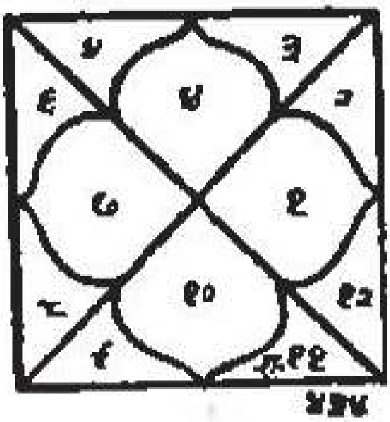

सातवें भाव में मित्र शनि की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक की आयु के बारे में कभी-कभी चिन्ताजनक स्थितियों का मुकाबला करना पड़ता है तथा पुरातत्त्व की हानि भी होती है। वह उदर-विकार से ग्रस्त रहता है। जीवन-निर्वाह के लिए उसे अनेक गुप्त युक्तियों का आश्रय लेना पड़ता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

कर्क लग्न : नवमभाव : राहु

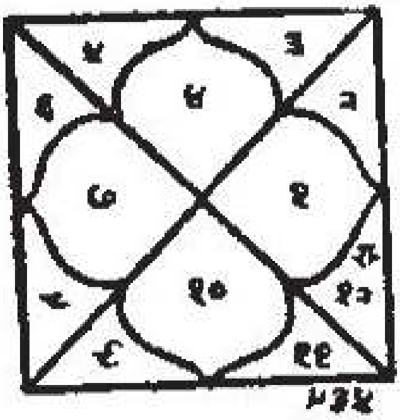

नवें भाव में शत्रु गुरु की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक की भाग्योन्नति में कठिनाइयाँ आती हैं तथा धर्म का भी यथावत् पालन नहीं हो पाता।

उसे कभी-कभी बड़े संकटों का सामना भी करना पड़ता है, परन्तु गुप्त युक्तियों तथा परिश्रम के बल पर कुछ सफलता भी प्राप्त करता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

कर्क लग्न : दशमभाव : राहु

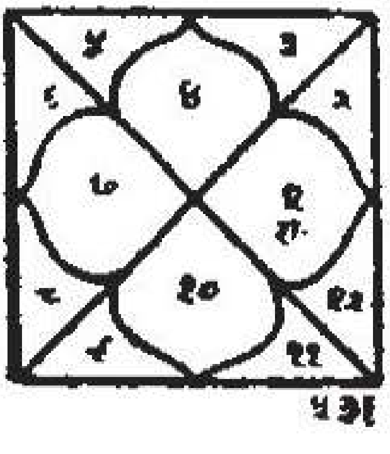

दसवें भाव में शत्रु मंगल की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में परेशानियाँ उठानी पड़ती हैं। अनेक कष्टों को भोगने तथा अनेक बार निराश होने के बाद वह अपने परिश्रम, धैर्य तथा बहादुरी से थोड़ी बहुत उन्नति करता तथा प्रतिष्ठा को बचाता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

कर्क लग्न : एकादशभाव : राहु

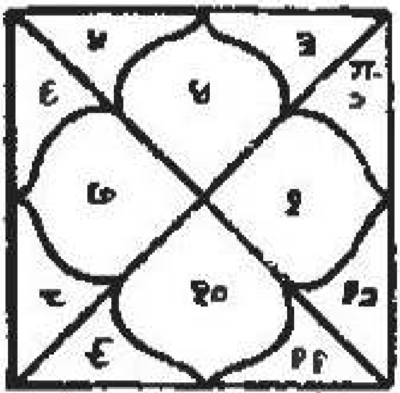

४३७

ग्यारहवें भाव में मित्र शुक्र की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को बड़ी चतुराई के साथ यथेष्ट धन का लाभ होता है, परन्तु कभी-कभी सामान्य कठिनाइयाँ भी उठानी पड़ती हैं तथा संकटों का सामना करना पड़ता है। कभी कभी आकस्मिक रूप से भी धन-लाभ होता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

कर्क लग्न : द्वादशभाव : राहु

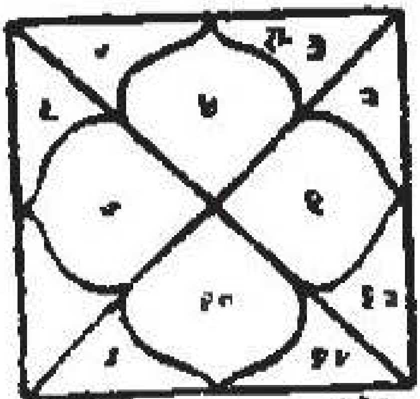

४३८

बारहवें भाव में मित्र बुध की राशि में स्थित राहु के प्रभाव से जातक को बाहरी स्थानों के संबंध से गुप्त युक्तियों के बल पर लाभ होता है तथा खर्च अधिक रहता है। वह परदेश में विशेष सम्मान एवं ख्याति प्राप्त करता है।

ऐसा व्यक्ति अपनी कमजोरियों को प्रकट नहीं करता तथा बड़ी चतुराई तथा बुद्धिमानी से उन्नति एवं सफलता प्राप्त करता है।

'कर्क' लग्न में 'केतु'

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

कर्क लग्न : प्रथमभाव : केतु

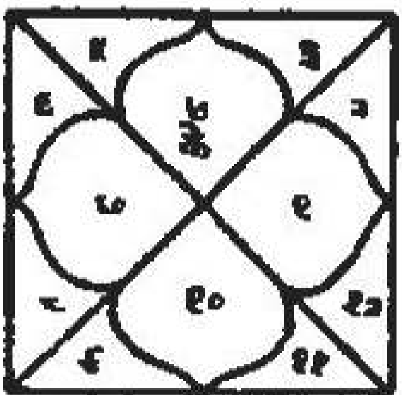

४३९

पहले भाव में शत्रु चन्द्रमा की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक के शरीर पर किसी गहरी चोट अथवा घाव का निशान बनता है। शारीरिक सौन्दर्य तथा स्वास्थ्य में कमी आती है। चेचक की बीमारी हो सकती है तथा कभी-कभी मृत्युतुल्य कष्ट भी भोगना पड़ता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

कर्क लग्न : द्वितीयभाव : केतु

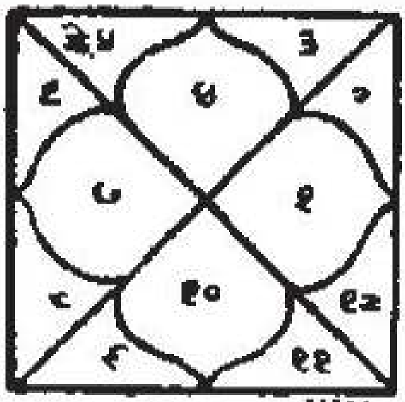

४४०

दूसरे भाव में शत्रु सूर्य की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक के धन की अत्यधिक हानि होती है तथा उसी के कारण बड़े संकटों का सामना भी करना पड़ता है। कुटुम्ब से क्लेश मिलता है। ऐसा व्यक्ति ऋण लेकर अपना काम चलाता है तथा परिश्रम एवं गुप्त युक्तियों द्वारा अपने प्रभाव की रक्षा करता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

कर्क लग्न : तृतीयभाव : केतु

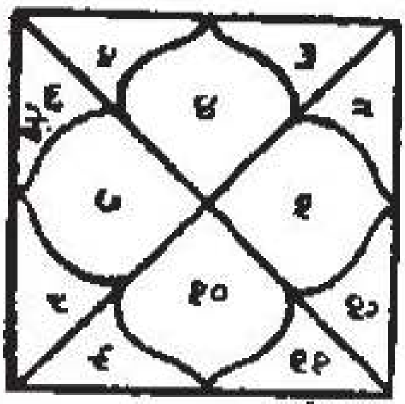

४४१

तीसरे भाव में मित्र बुध की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक के पराक्रम में वृद्धि होती है। वह गुप्त युक्तियों, विवेक तथा कठिन परिश्रम द्वारा सफलता प्राप्त करता है।

ऐसा व्यक्ति उद्दण्ड स्वभाव तथा उग्र प्रकृति का होता है। भाई-बहिनों के सुख में भी कमी रहती है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

कर्क लग्न : चतुर्थभाव : केतु

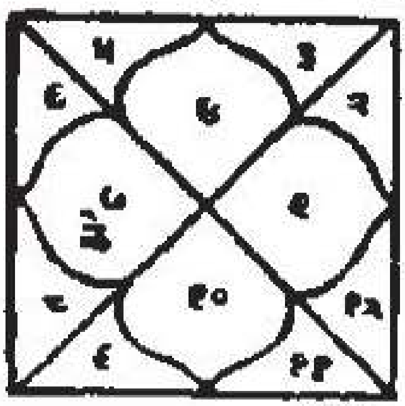

४४२

चौथे भाव में मित्र शुक्र की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को माता के सुख में कमी रहती है तथा परदेश में जाकर रहना पड़ता है। बार-बार स्थान का परिवर्तन भी करना पड़ता है। कभी-कभी घोर संकट भी आ जाते हैं। अन्त में, उसे सामान्य सुख का लाभ भी होता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

कर्क लग्न : पंचमभाव : केतु

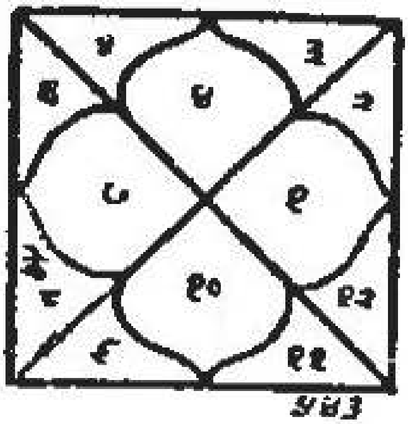

पांचवें भाव में शत्रु मंगल की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को सन्तान-पक्ष से कष्ट मिलता है तथा विद्याध्ययन में भी कठिनाइयाँ आती हैं। परन्तु ऐसा व्यक्ति चतुर, चालाक तथा बातूनी होने के कारण अपनी अयोग्यता को छिपाकर दूसरों पर प्रभाव डालने में सफल हो जाता है। वह सन्तोषी तथा शीलयुक्त भी नहीं होता।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

कर्क लग्न : षष्ठभाव : केतु

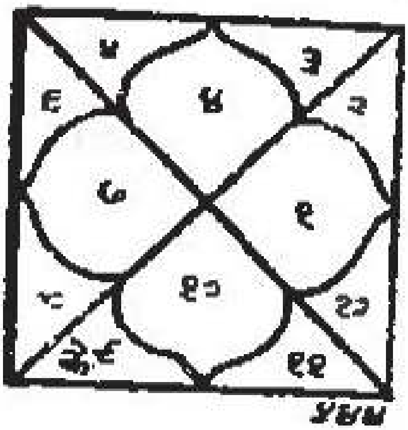

छठे भाव में शत्रु गुरु की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को शत्रु पक्ष में बड़ी सफलताएँ मिलती हैं। वह कठिन स्थितियों में भी अपने धैर्य तथा साहस को नहीं छोड़ता। ऐसा व्यक्ति स्वस्थ शरीर का, साहसी तथा परिश्रमी होता है, परन्तु उसमें दया, शील, सौजन्य आदि सद्गुण नहीं होते।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

कर्क लग्न : सप्तमभाव : केतु

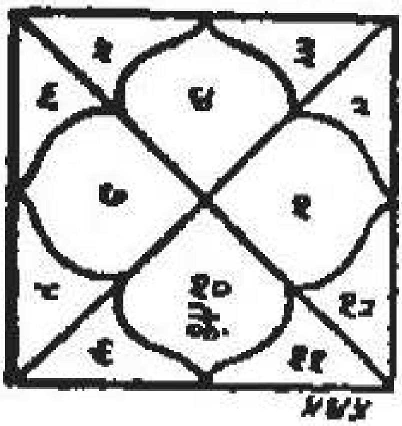

सातवें भाव में मित्र शनि की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाइयों तथा हानियों का सामना करना पड़ता है। मूत्रेन्द्रिय में विकार होता है। विषयेच्छा अधिक रहती है। वह भोगी, जिद्दी, हठी तथा कठिन परिश्रमी होता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

कर्क लग्न : अष्टमभाव : केतु

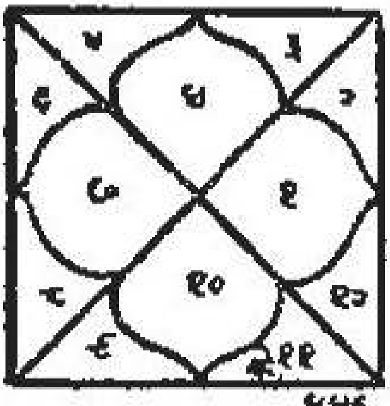

५४६

आठवें भाव में मित्र शनि की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को आयु-पक्ष में अनेक बार मृत्यु-तुल्य कष्ट होते हैं तथा पुरातत्त्व की हानि भी होती है। पेट शिकार-ग्रस्त रहता है। धन का संकट तथा गुप्त चिन्ताएँ रहती हैं। ऐसा व्यक्ति गुप्त रूप से अपनी उन्नति तथा सुख के लिए निरन्तर प्रयत्नशील बना रहता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

कर्क लग्न : नवमभाव : केतु

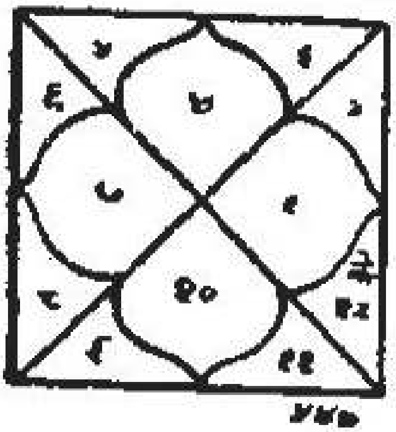

५४७

नवें भाव में शत्रु गुरु की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को अपनी भाग्योन्नति के लिए कठिन परिश्रम करना पड़ता है तथा कभी-कभी बड़े संकटों तथा विफलताओं का शिकार भी होना पड़ता है।

वह गुप्त रूप से अपनी उन्नति के लिए प्रयत्न करता है, परन्तु भाग्योन्नति बड़ी धीमी गति से ही होती है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

कर्क लग्न : दशमभाव : केतु

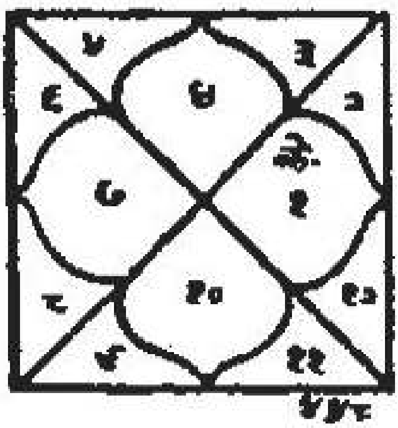

५४८

दसवें भाव में शत्रु मंगल की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को राज्य, पिता तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाइयाँ उठानी पड़ती हैं। यश तथा प्रतिष्ठा को धक्का भी लगता है परन्तु वह अपनी गुप्त युक्ति एवं परिश्रम द्वारा पुनः प्रतिष्ठा प्राप्त करने के लिए प्रयत्नशील बना रहता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

कर्क लग्न : एकादशभाव : केतु

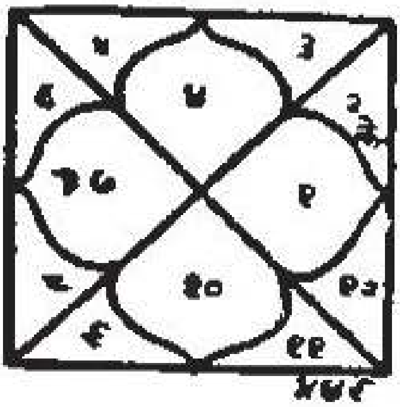

ग्यारहवें भाव में मित्र शुक्र की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक आर्थिक लाभ पाने के लिए कठोर परिश्रम करता है तथा परिश्रम, चतुराई एवं गुप्त युक्तियों के बल पर लाभ में वृद्धि भी करता है।

ऐसे व्यक्ति को बारम्बार संकटों का सामना करना पड़ता है, परन्तु वह कभी हिम्मत नहीं हारता तथा परिश्रम से भी नहीं चुराता।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

कर्क लग्न : द्वादशभाव : केतु

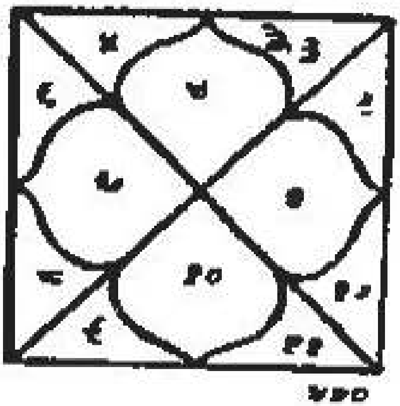

बारहवें भाव में मित्र बुध की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को खर्च के बारे में बहुत परेशानी उठानी पड़ती है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्धों से भी कष्ट ही मिलता है।

ऐसा जातक गुप्त युक्तियों से काम लेनेवाला, परिश्रमी तथा भीतर-ही-भीतर दुःखी रहने वाला होता है।

'कर्क' लग्न समाप्त